CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Module PH-12.

|| the gurukul ||

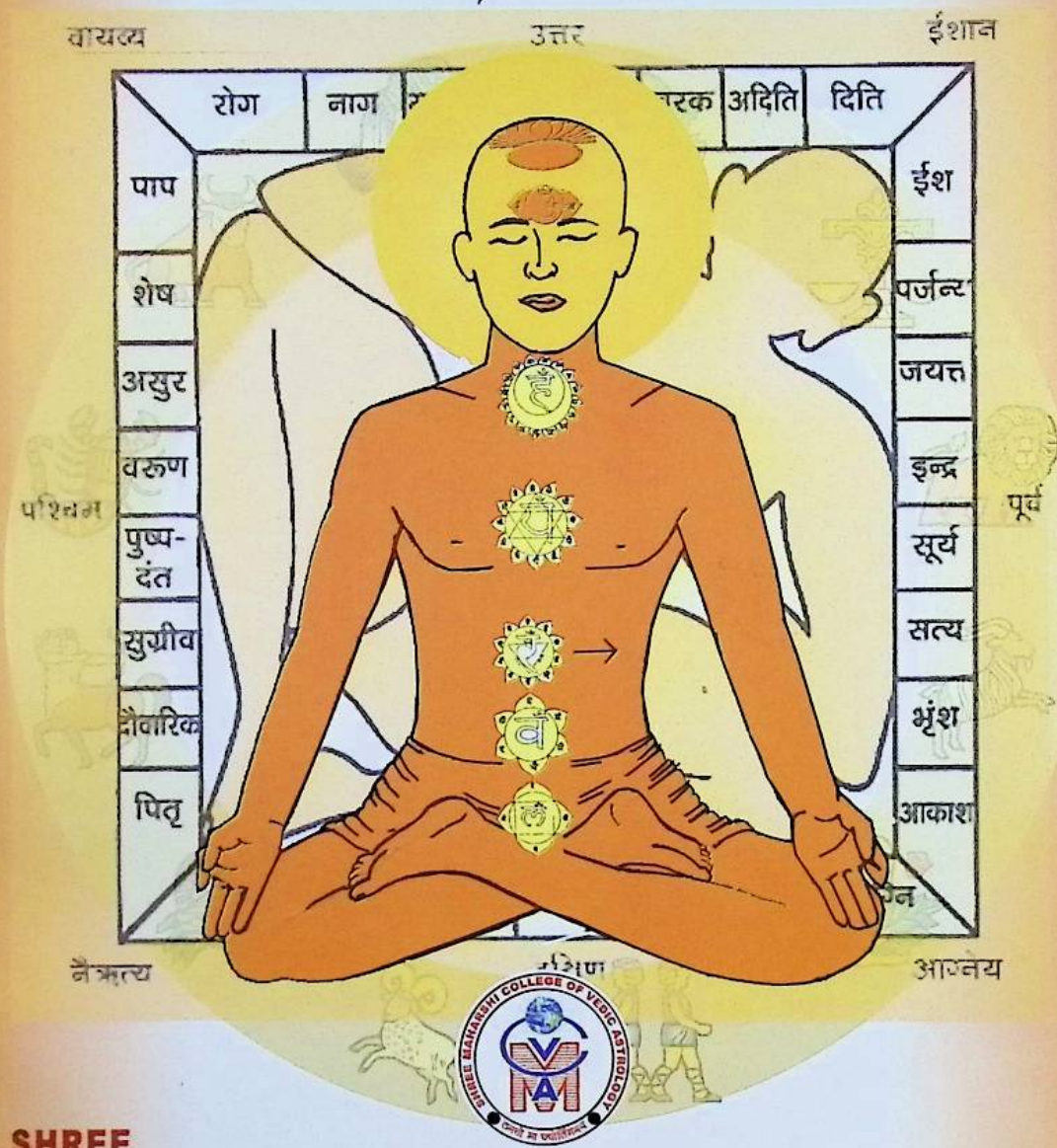

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY

The Harmony of Space & Elegance

A Unit of KNS Society

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vedic Palmistry
Module - 12

अनुक्रमणिका

अध्याय 1 :	मुखाकृति विचार	03–24
अध्याय 2 :	कपाल पर तिलों का प्रभाव	25–37
अध्याय 3 :	नैत्रों का आकार तथा व्यक्ति का चरित्र	38–47
अध्याय 4 :	स्त्रियों की विशेष रेखाएं	48–80
अध्याय 5 :	कान	81–89
अध्याय 6 :	नाक	90–99
अध्याय 7 :	होंठ	100–107

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुखाकृति विचार

जब हम किसी सामान्य व्यक्ति को देखते है तब सबसे पहले उसकी शक्ल देखते है। यदि उसमें कोई खास विकलांगता है या उसका शरीर बहुत बौना, ऊँचा मोटा हो तो इन बातों की ओर भी ध्यान जाता है, परन्तु व्यक्ति के स्वास्थ्य, चरित्र, मूर्खता, कमजोरियों आदि की सूचना उसके मुख मंड़ल से ही मिलती है। कदाचित यही वजह है कि मुखाकृति विज्ञान एक स्वतंत्र शाखा के रूप में विकसित हुआ है।

भविष्यवाणी करने वाले के पास सूक्ष्म दृष्टि, अवलोकन तथा विश्लेषण करने की विशेषज्ञता होनी चाहिये। सिर में बालों से लेकर गर्दन तक मुख मंड़ल और उसके समस्त अंग आते है।

अ. पृथ्वी तत्व वाला चेहरा

लगभग वर्गाकार या चौरस होता है। उन चेहरों की अस्थियां मजबूत होती है, ढुड्डी कुछ हटी हुई है और मस्तक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रशस्त होता है। ये जातक शक्तिमान, व्यवहारिक तथा उद्यमशील

होते है। ये सिद्धांतों से समझोता नहीं करते तथा सुखी व समृद्ध होते है। किंतु यदि पृथ्वी तत्व आवश्यकता से अधिक हो जाए, तो तमोगुण भी उसी अनुपात में बढ़ जाते है। ऐसा होने पर जातक के मूर्त गुण नष्ट होकर मूर्खता, आलस्य, विलासिता, हठीपन आदि दुर्गुण आ जाते है। फल स्वरूप उन्हें कष्ट सहना पड़ता है।

पृथ्वी तत्व वाली स्त्रियां प्रायः मोटी, चाल में मन्थर, अधिक आहार ग्रहण करने वाली, परन्तु व्यवहार कुशल होती है। पृथ्वी तत्व का आधिक्य उन्हें दुर्बल चरित्र वाली भी बना सकता है।

जल तत्व वाला चेहरा

जल तत्व वाले जातक का चेहरा गोलाकार होता है। ऐसे जातकों में मांसाहार की प्रधानता होने के कारण गाल भरे हुए और चिकने होते है। इनका शरीर स्थूल और पेट बाहर निकला होता है। ये लोग चंचल और मनोरंजनप्रिय होते है। सरल जीवन इन्हें भाता है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा भाग-दौड़, परिश्रम, साध्य जीवन से ये घबराते है। ये लोग अध्ययनप्रिय, चित्रकार, संगीतज्ञ इत्यादि बनते है। जल तत्व का आधिक्य होने पर इनमें सुस्ती, निराशा, अकर्मण्यता इत्यादि जैसे दुर्गुण विकसित हो जाते है। कभी-कभी इनमें आत्महत्या का विचार भी आ जाता है। जल तत्व वाली स्त्री जातक श्रृंगारप्रिय, और खान-पान की शौकीन होती है। इनमें सेवा प्रेम की भावना होती है। यदि जल तत्व की मात्रा बढ़ जायें तो ये खिन्नता, रोग और निराशा के सागर में डूब जाती है।

अग्नि तत्व वाला चेहरा

अग्नि तत्व वाले जातक का सिर चौड़ा होता है। अग्नि तत्व के जातकों की अंगारों सी दहकती आंखे होते है। कृषकाय शरीर वाले, चपल, गतिशील और ऊपर की ओर देखकर चलते है। मस्तक प्रशस्त होने से ये लोग बुद्धिवान, जिज्ञासु, विचारक, साहसी, चिंतक, दार्शनिक तथा ऊर्जावान होते है। इनकी याददाश्त तेज होती है। ये तर्कशील होते है और उन बातों की परवाह नहीं करते जिनका वैज्ञानिक आधार न हो। प्रायः ये शक्ति के उपासक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होते है तथा देश, काल व परिस्थिति के अनुरूप कभी रचनात्मक तो कभी विस्फोटक होते है।

यदि इनकी ठुड्डी वाला भाग अधिकं नुकीला और सकरा होगा तो इनमें क्रोध, विध्वंस, प्रतिशोध और पाशविक प्रवृत्ति बेकाबू हो जाती है। ऐसा होने पर ये लोग दुर्दान्त अपराधी भी हो सकते है।

स्त्री जातक गृहस्थी की छोटी–मोटी समस्याओं से ग्रसित रहती है। राजनीति इनके लिये आदर्श क्षेत्र है जहां ये अपनी मर्जी की मालिक हो सकती है। लाल रंग की चीजे इन्हें अधिक पसंद आती है। स्वभाव से ये चिडचिड़ी, वाचाल, जिद्दी और व्यसनी हो सकती है।

वायु तत्व वाला चेहरा

वायु तत्व वाला चेहरा लगभग अण्ड़ाकार तथा गोलाई लिए हुए होता है। ऐसे चेहरे लुभावने तथा सुंदर होते है। इन जातकों के स्वभाव में उत्साह,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लगन, स्वच्छता, आशावादिता पाई जाती है। यदि मुख ऊपर से चौड़ा हो तो ये जिज्ञासु और तर्क प्रवीण होते है। ऐसे लोगों में एक प्रकार की अस्थिरता होती है। व्यंग्य, पर्यटन में इनकी रूचि होती है। ये शंकी मिजाज भी हो सकते है। ऐसी मुखाकृति की स्त्रियां कर्मठ होती है तथा किसी को भी वशीभूत कर लेती है। वे घर–गृहस्थी को सुचारूरूप से चला लेती है। वायु तत्व की अधिकता हो जाने पर स्त्री पुरूष दोनों ही जातकों में मिथ्या भाषण, यौनाचार आदि के दुर्गुणों में वृद्धि संभव है।

आकाश तत्व वाला चेहरा

आकाश तत्व वाला चेहरा उल्टे घड़े जैसा लगता है। इनके कान से ऊपर का भाग विस्तृत होता है जो सद्गुणों का साक्षी है। ये जातक विद्यावान, हर क्षेत्र में अग्रणी तथा प्रभावी होते है। इनके मुखमंड़ल में यदि मांसलता और चिकनाई भी हो तो सतोगुणों में रजोगुणों का भी मिश्रण हो जाता है।

तब ये जातक प्रख्यात राजनेता, धर्म गुरू या साहित्यकार हो सकते है। इस किस्म के चेहरे वाली स्त्रियां आध्यात्मिक होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि चेहरे पर स्निग्धता के कारण रजोगुणों का भी समावेश हो जाएं तो उनमें लज्जाशीलता, मधुरता, धर्मपरायणता, सेवा आदि के गुण भी आ जाते है।

इस संबंध में एक बात और गौर करने की है विविध तत्व प्रधान जातकों की राशियां भी प्रायः निश्चित होती है जैसे पृथ्वी तत्व वालों की वृषभ, कन्या तथा मकर, जल तत्व की कर्क, वृश्चिक और मीन, अग्नि तत्व की मेष, सिंह व धनु, वायु तत्व की मिथुन, तुला और कुंभ एवं आकाश तत्व सब में समाविष्ट होते हुए भी सबसे पृथक होते है।

उपरोक्त विवरण से इस नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सकता कि केवल पांच प्रकार के ही मुखड़े होते है। इन्सानों की शक्लें ज्यामितीय हो सकती है किन्हीं अन्य प्राणियों के जैसी भी हो सकती है और उनके फलादेश, चारित्रिक विशेषताएं भी तदनुरूप होती है।

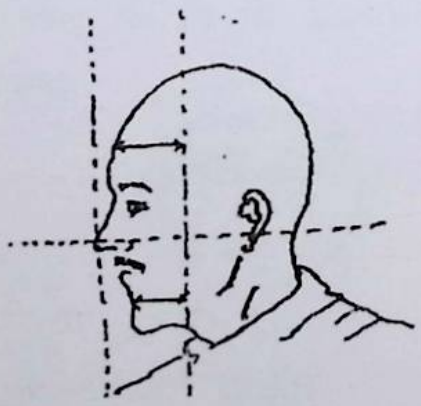

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समकोण आकार

इस प्रकार के मुख में आंख के नीचे से कान के नीचे और कान के नीचे से ठुड्डी के पीछे तक तथा ठुड्डी से वापस आंख तक तीन एक बराबर रेखाओं का त्रिभुज बनता है। ऐसे मुखाकार वाले जातक स्पष्ट, सत्यनिष्ठ, सम्य, क्षमावान, गंभीर एवं शांत प्रकृति के होते है। इन्हें क्रोध नहीं आता पर जब आता है तो उन्हें वश में करना असंभव हो जाता है।

न्यूनकोण आकार

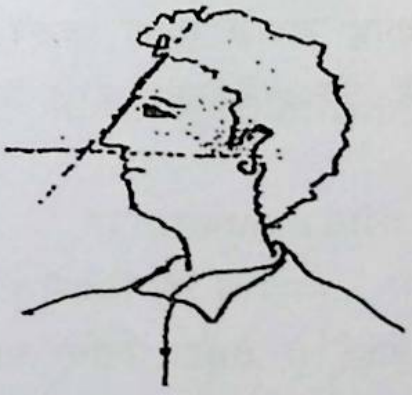

नाक के संधि स्थल से कान के नीचे तक और उसे काटती हुई नाक के पीछे से मस्तक के सामने स्पर्श करती दो रेखाएं खींची जाएं तो छोटे कोण बनते है। कैम्पर नामक पाश्चात्य फेस रीड़र ने अपने शोध से बतलाया है कि विश्व में विभिन्न प्रदेशों के निवासियों के कैसे मुख कोण बनते है। 90° से जितना कम कोण बनेगा व्यक्ति उतना ही जंगली तथा वहशी होगा। उन का मानसिक विकास भी उसी अनुपात में कम होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्मतोदर आकार

इस प्रकार के मुख में परकाल से अर्ध चंद्रकार रेखा खींची जाए तो वह ठुड्डी से ललाट तक चेहरे को अपने अंदर समा लेती है। अंग्रेजी में इसे कान्वेक्स चेहरा कहते है। इस तरह के जातक व्यवहार कुशल, तीक्ष्ण, पारखी नजर वाले, दो टूक खरी-खरी बोलने वाले, निर्भीक, कभी-कभी आक्रामक और चपल होते है। ये अपने हिसाब से चलते है अपने सिद्धांत तथा लक्ष्य खुद तय करते है। आजकल के माहौल में ये प्रायः सफल नहीं होते क्योंकि कोई गलत काम करने में उनकी अतंरात्मा बगावत करती है। ये भरोसेमंद होते है।

नतोदर आकार

उपरोक्त के विपरीत यदि उल्टी अर्ध चंद्राकार रेखा खीचीं जाए तो चेहरा उसके बाहर होता है अर्थात माथा व ठुड्डी थोडी आगे तथा नाक, गाल, होठ आदि अंदर की ओर होते है। ये कानकेव चेहरे कहलाते है। ऐसे जातक चतुर, शांत और स्थिर होते है। इनके लिये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंजिल महत्वपूर्ण है तथा उस तक पहुंचने का रास्ता सीधा हो या टेढ़ा इससे उन्हें कोई सरोकार नहीं होता। हर काम करने से पहले ये नफा–नुकसान का अंदाजा लगा लेते है इसलिये इनकी वित्तिय स्थिति प्रायः सुदृढ़ होती है।

मिश्रित आकार

कुछ चेहरे ऐसे होते है जिन्हें किसी एक श्रेणी में नहीं रखा जा सकता या विविध प्रकार के आकारों का मिश्रण उनमें दृष्टिगत होता है, इसलिये इन चेहरों के आधार पर उनके स्वभाव या चरित्र के विषय में कथन करना दुष्कर कार्य है।

अन्य प्राणियों से मिलती जुलती मानव मुखाकृतियां

श्वान

श्वान या कुत्ते में जबड़े अहम होते है, इसलिये ऐसी आकृति वाले मुख में छोटा कोण बनता है अर्थात मुंह चेहरे से ज्यादा आगे की ओर निकला रहता है। ऐसे जातक ईमानदार, ध्यान रखने वाले होते है। तथा इनमें चापलूसी, शोर करना और घर में शेर तथा घर के बाहर दब्बू होना जैसे गुण भी होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चील

इस मुखाकृति के लोगों की नाक पक्षेपी और माथा हल्की गोलाई लिये हुए होता है। ये लोग गर्वीले, साहसी, आक्रामक, दूरदर्शी, चरित्रवान और कर्मठ होते है। जरा सी बात में उत्तेजित होकर ये किसी पर भी झपट पड़ते है।

तोता

इनकी नासिका तोते जैसी होती है। ये अपने ज्ञान का दिखावा करने वाले होते है।

बन्दर

यह प्राणी मानव का पूर्वज माना जाता है। ये जातक सामान्य बुद्धि के और चौकन्ने होते है। इनमें यौनेच्छा प्रबल होती है। चालाकी, एवं छल-कपट में ये पारंगत होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गधा

गधे जैसा मुख वाले जातक के मुख का आकार लंबा, माथा छोटा किन्तु चौड़ा और जबड़ा भी चौड़ा होता है। अध्ययन चिंतन से विरक्त, अल्प संतोषी होते है। आलसी होते हुए भी परिश्रम करना इनकी नियति होती है।

अश्व

इन जातकों के चेहरे की बनावट अश्व जैसी होती है। इनके चेहरे पर किंचित कांति नजर आती है। ये परम स्वामी भक्त और चपल होते है।

ऊँट

ऊँट जैसी शक्ल के लोगों की गर्दन लंबी, जबड़ा विस्तृत, होठ दांत बहुत बड़े और असुन्दर होते है। इनका मुंह सतत चलता रहता जैसे चुविंगम चबा रहे हो। ये संजीदा और मेहनतकश होते है, परन्तु जीवन भर दूसरे लोग इनका शोषण ही करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बकरा

बकरे जैसी मुखाकृति के लोग न्यूनकोणीय चेहरे के होते है। मुंह पीछे चोड़ा पर आगे संकुचित होता है। ठुड्डी में पतली दाढ़ी प्रायः ऐसे लोग रखते है। इधर–उधर घूमना इनका प्रिय शौक है और इनमें संतति उत्पादन क्षमता भी सामान्य से अधिक होती है।

काग

इन जातकों को नाक प्रक्षेपी तथा आंखे गोल होती है। आंखों में चातुर्य, बेशर्मी, स्वार्थ और दुःसाहस साफ झलकता है। इनकी आवाज में कर्कशता होती है, परन्तु व्यवसाय में ये लोग सफल रहते है।

मूषक

इन जातकों का छोटा ललाट तथा सीधी नोकदार नासिका होती है। इनमें सीखने की ललक होती है परन्तु अपनी बुद्धि का ये गलत इस्तेमाल करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मार्जर

इन जातकों में आंखों की महत्ता विशेष है। इनकी सूंघने की क्षमता आश्चर्यजनक होती है। इन जातकों की चारित्रिक विशेषताएं हिंसा, आक्रामकता, सतर्कता तथा गतिशीलता है।

वृषभ

वृषभ या बैल जैसे चेहरें वालें जातक का मस्तक प्रशस्त, कम उभारवाला, आंखों के नीचे की हड्डी उठी हुई, गाल चपटे और नथुने फूले हुए होते है। ऐसे जातक उदासीन प्रकृत्ति के परन्तु सेवाभावी और परिश्रमी होते है।

महिष

महिष या भैंसा भी बैल जैसे मुख वाला प्राणी है। परन्तु यह अधिक सुस्त, धीमा, यामवर्ण और स्थूल होता है। इस मुखाकृति के लोग आलसी, हठीले तथा क्रोधी होते है। इनसे काम करवाने के लिये जोर-जबर्दस्ती करनी पड़ती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भेड़

ऐसे मुखड़े वाले भेड़चाल चलते है। अपने विवेक से काम लेना इन्हें नहीं आता केवल नकल करना जानते है। ये नम्र और सीधे होते है।

भेड़ियां

भेड़ियों जैसी मुखाकृति के जातक खूखांर, कपटी तथा नकचढ़े होते है। ये अपराध में भी लिप्त हो सकते है।

सिंह

फैली हुई नाक, सूच्चाकार मुख, घने केश, चमकते नेत्र, मोटे अधर, सिंह की पहचान है। ऐसी शक्ल के लोग अति महत्वाकांक्षी, पराक्रमी, बलिष्ट, बात के धनी और कुशल नेतृत्व वाले होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोमड़ी

लोमड़ी जैसे चेहरे वाले जातकों में धूर्तता, मुसाहिबगिरी, चुगलखोरी और छल–कपट विद्यमान होता है। अपना काम निकालना और दूसरों का काम बिगाड़ना इनका खास गुण होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्तक की रेखाएं

रेखाएं मानव की हथेलियों और पावं के तलुवों में ही नहीं होती अपितु चेहरे पर खास तौर पर मस्तक पर उभरने वाली रेखाओं तथा झुरियों का भी ज्योतिर्विज्ञान से गहरा संबंध है और ये रेखाएं जातक के भविष्य की पर्याप्त सूचना देती है। मनुष्य के माथे पर सात ग्रहों से संबंधित सात रेखाएं अर्थात चंद्र रेखा, मंगल रेखा, गुरू रेखा, शुक्र रेखा, शनि रेखा तथा सूर्य रेखा होती है, यद्यपि इनका क्रम उपर नीचे होता है। सभी रेखाएं प्रत्येक व्यक्ति के ललाट पर स्पष्ट हों यह आवश्यक नहीं है। समतल माथे पर रेखाएं जातक के स्नेही स्वभाव की द्योतक होती है।

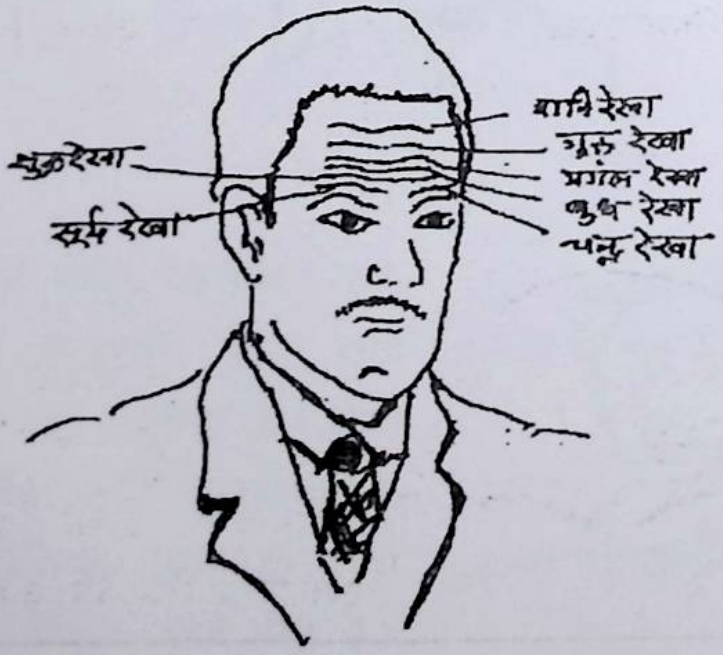

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

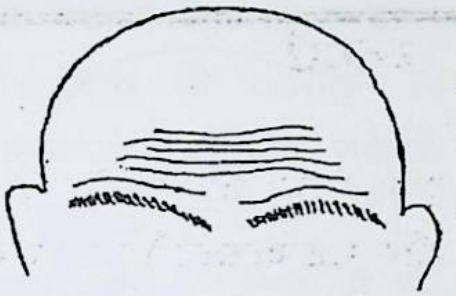

बुद्धिजीवि तथा दिमागी काम करने वालों के मस्तक की रेखाएं भौंहों तक या उनके बीच तक जाती है।

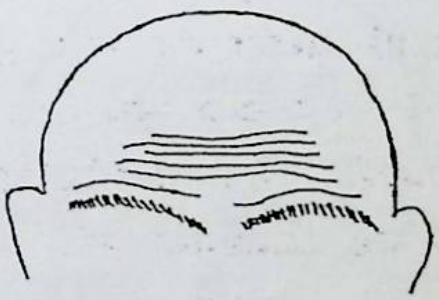

घनी, खड़ी, लंबी भौंहों के बीच रेखाएं बतलाती है कि व्यक्ति के पास धन–संपदा की कमी नहीं है। ऐसा जातक कायदे वाला और विश्वसनीय होगा। चिंता आवेश में भी मस्तक पर रेखाएं अधिक उभर आती है। एकांतप्रिय, अंर्तमुखी व्यक्ति के ललाट पर कम रेखाएं व झुर्रियां होंगी। यही बात चालाक तथा कपटी लोगों पर लागू होती है।

माथे पर रेखाएं और झुर्रियां हों ही नहीं तो वह व्यक्ति महास्वार्थी होगा तथा उसकी स्मरण शक्ति भी क्षीण होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भविष्य पुराण के अनुसार मस्तक पर पांच स्पष्ट रेखाएं हो तो व्यक्ति वैभव सम्पन्न तथा मधुरवाणी का स्वामी होता है। वह लंबी आयु तक सांसारिक सुखों का उपयोग करता है।

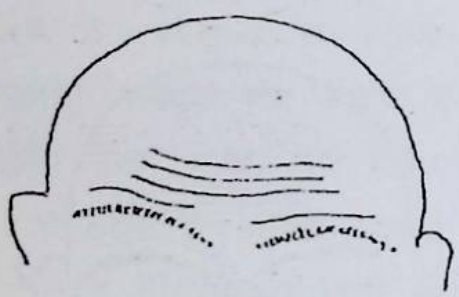

तीन या चार रेखाएं हो तो जातक नेता, उच्चाधिकारी या सफल व्यापारी हो सकता है और लगभग 70 वर्ष तक जिन्दा रहता है।

दो अथवा एक रेखाओं के होने पर व्यक्ति आलसी व कामचोर होता है। खुशामद से खुश होता है, नौकरी जैसे-तैसे करता है, प्रेम में ईमानदारी का निर्वाह नहीं करता और जीवन संघर्षमय तरीके से व्यतीत करता है।

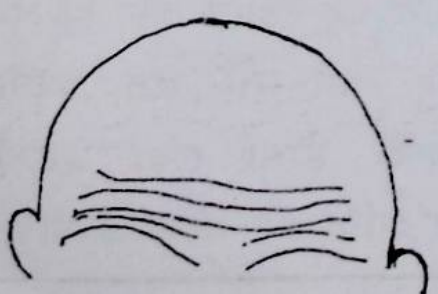

यदि माथे के ऊपर कनपटी तक तीन अटूट रेखाएं हो तो वे जातक की पूर्ण आयु एवं सौभाग्य की सूचना देती है। अधिक रेखाएं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उम्र घटाती है, बहुत बारीक रेखाएं कम उम्र का प्रतीक है और पांच से अधिक रेखाएं हो तो व्यक्ति 50 वर्ष के आसपास तक इस नश्वर संसार में रहेगा।

ललाट पर रेखाओं से बनने वाले चिन्हों का भी गूढ़ अर्थ सामुद्रिक शास्त्रों ने बतलाया है। यदि त्रिशूल का निशान बनता है तो जातक संतुष्ट, ऐश्वर्यशाली तथा बुद्धिमान होता है।

पहली रेखा के नीचे वाली रेखा अखंड़ हो तो व्यक्ति कर्तव्यनिष्ट, परोपकारी तथा सदाचारी होगा।

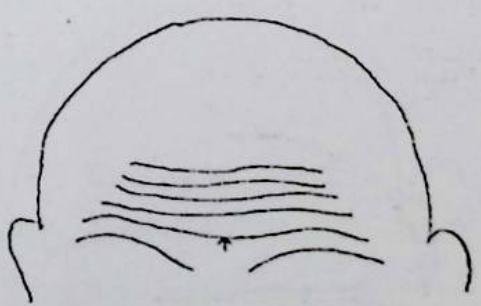

सबसे ऊपर की रेखा जो बालों के निकट होती है, वह यदि अटूट हो तो जातक की याददाश्त अच्छी होती है तथा वह ज्ञानी और सद्गुणी होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यही रेखा अगर वक्र व खंड़ित हो तो जातक को चालबाज और धूर्त बना देती है।

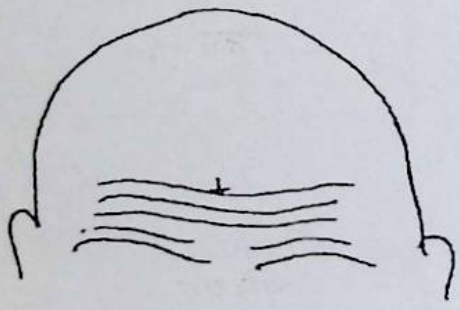

इस रेखा से तीसरी रेखा अटूट हो तो जातक बलिष्ट तथा दृढ़ इच्छाशक्ति से युक्त होगा।

परन्तु ये लकीर अगर खंड़ित हो तो वह क्रोधी, झग्ड़ालू और जल्दबाज होता है।

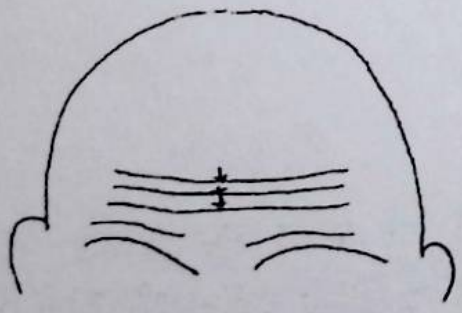

जिस खुश किस्मत के माथे पर उपरोक्त तीनों लकीरे सीधी और अटूट होगीं वह सभी गुणों से सम्पन्न, धन–दौलत व अन्य भौतिक संसाधनों का स्वामी तथा लोकप्रिय होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाश्चात्य मुखाकृति विज्ञानियों ने पहली रेखा को शनि रेखा, दूसरी को गुरू, तीसरी को मंगल रेखा माना है। दाहिनी ओर भौंहे के उपर वाली लकीर सूर्य रेखा तथा बांई ओर भौंहे के उपर चंद्र रेखा होती है। भौंहों के बीच शुक्र रेखा एवं नाक के सेतु पर बुध रेखा का स्थान बताया गया है। इन रेखाओं का फलादेश निम्नानुसार होता है।

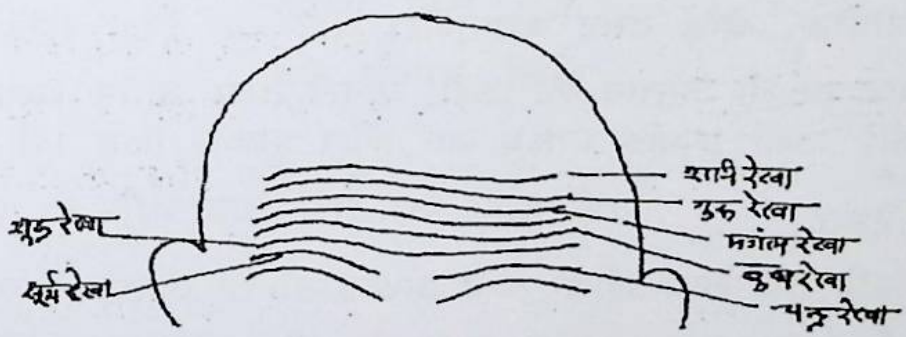

शनि रेखा

इस रेखा के अटूट, स्पष्ट और सीधी होने पर व्यक्ति गंभीर, दूरदर्शी और बुद्धिमान होता है, पर अगर रेखा खंड़ित, ऊंची–नीची हो तो वह सुस्त, कामटालू, गुस्सैल और सनकी होगा।

गुरू रेखा

सीधी, सरल, स्पष्ट होने पर यह रेखा जातक को उदार, सज्जन, मेघावी व ज्ञानी बनाती है और टूटी–फूटी होने पर औसत बुद्धि का बड़बोला बनाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल रेखा

सुंदर, सीधी रेखा हो तो जातक बलवान, साहसी, कर्मठ, खंड़ित, क्रोधी, कायर तथा शेखी मारने वाला होता है।

सूर्य रेखा

उम्दा सीधी साफ लकीर जातक को लोकप्रिय, कुशल राजनीतिज्ञ, श्रेष्ठ वक्ता बनाएगी। यदि यह रेखा खंड़ित या अस्पष्ट हो तो जातक को छली, कपटी तथा अप्रिय बनाएगी।

चंद्र रेखा

यदि चंद्र रेखा सीधी तथा अखंड़ हो तो जातक सच्चरित्र, आदर्श, दयावान तथा परोपकारी होता है। यदि यह खंड़ित हो तो जातक के सारे गुण शिथिल पड़ जाएंगे।

शुक्र रेखा

शुक्र रेखा यदि सीधी, स्पष्ट हो तो जातक प्रेमी, व्यवहारकुशल, कला मर्मज्ञ तथा इन्साफ पसन्द होता है तथा यह विकृत होने की स्थिति में धोखेबाज तथा धूर्त होगा।

बुध रेखा

अच्छी, साफ–सुथरी बुध रेखा जातक को कुशल वक्ता, गणितज्ञ, वैज्ञानिक या कामयाब व्यापारी बनाती है। टेढ़ी–मेढ़ी, टूटी हुई बुध रेखा हो तो वह कुटिल तथा ईर्ष्यालु बनेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कपाल पर तिलों का प्रभाव

तिल का स्थान

1. ललाट या कपाल के दाहिनी ओर तथा ऊपर काला तिल शुक्र का प्रभाव लिये

होता है। इसी प्रकार शनि का प्रभाव साक्ष्य तिल रीढ की अस्थि के नीचे बाएं सिरे पर होता है।

पुरूष

यदि जातक के ललाट पर तिल हो तो वह उम्र के आखिरी 20 वर्षो तक बीमार रहेगा। मधुवर्णी तिल हो तो विरासत में संपत्ति मिलती है, किन्तु समाज में स्वीकार्यता नहीं मिलती। व्यक्ति झग्ड़ालु होता है। दूध, दही, मोती का दान करे और विधवाओं की मदद करें। लक्ष्मीजी की पूजा फल प्राप्ति कराएगी।

स्त्री

यदि जातक के ललाट पर तिल हो तो ऐसा तिल महिला के लिये शुभ है। वह पवित्रात्मा व मधुर स्वभाव की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होती है एवं सबकी प्रशंसा प्राप्त करती हैं यद्यपि मान–अपमान की भावना से परे वह स्थिति प्रज्ञ होती है। विवाहोपरांत उसका अधिक समय विदेश प्रवास में होता है तथा मातृत्व सुख उसे देर से मिलता है। हीरा या नीलम पहनना शुभ है।

2. मस्तक के ऊपर बीचों बीच काला तिल। गुरू और शुक्र का प्रभाव विवेच्य तिल का साक्ष्य तिल दांए हाथ की कोहनी के नीचे होता है।

स्त्री

ऐसे तिल वाली स्त्री कलाकार होती है। नाटक, काव्य लेखन, चित्रकला में उसे महारत होगी। स्पष्ट वक्ता होने के कारण कई लोग उसके विरोधी भी हो जाते है।

पुरूष

यह तिल अशुभ फल कारक, परन्तु शहद के रंग का तिल हो तो फौजी नौकरी या ठेकों से लाभ अथवा सोना, चांदी, लोहा जैसी धातुओं या पशुओं के व्यापार से लाभ होगा। सट्टे से भी अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपाय

स्त्री–पुरूष दोनों पन्ना पहनें, पीपल का पेड़ लगाकर उसे प्रतिदिन सींचे, दाल का दान करें। भोजन निकाल कर गाय को खिलाएं।

3. ललाट पर ऊपर की ओर बाएं भाग में काला तिल (गुरू व बुध का असर साक्ष्य तिल दांए हाथ पर)

पुरूष

इस तरह के तिल वाले जातक को अशुभ ग्रहों के प्रभाव से लोग विश्वासघात करेंगे, कई संकट आएंगें और कारावास तक हो सकता है। शहद के वर्ण का तिल हो तो किसी उच्चाधिकारी की सहायता कदाचित्त मिल जाए, फिर भी परेशानी रहेगी।

स्त्री

ऐसी महिला प्रायः दो बार विवाह करती है। फिर भी पति सुख जैसा चाहिये नहीं मिलता। जन्म भूमि को छोड़ विदेश में बसना पड़ता है। वह किसी की विश्वासपात्र नहीं हो सकती।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपाय

मां दुर्गा की अर्चना करें, दुर्गा मंदिर में प्रसाद अर्पित करें, दुर्गा चालीसा का पाठ करें, कन्या भोजन, केसर, हल्दी, सोना व चने की दाल का दान लाभकारी होता है।

4. माथे के दाहिने सिरे के बीच काला तिल (शनि व शुक्र का प्रभाव पेट के दाएं भाग में कटि व जांघ के बीच साक्ष्य तिल)।

पुरूष

ऐसे तिल का कोई खास असर नहीं। मधुवर्णी तिल हो तो जातक अध्ययनप्रिय होगा। उसे धन की नहीं ज्ञान प्राप्ति में रूचि रहती है। जीवन के पूर्वाद्ध में किसी स्त्री द्वारा धोखा खाने के बाद आजन्म स्त्रियों पर भरोसा नहीं करता।

स्त्री

ऐसी महिला अत्यंत रूपवती होती है पर उसके विचार निम्न कोटि के होते है। पैसों की किल्लत उसे रहती है किन्तु सही गलत उपायों से धन प्राप्त करने की चेष्टा करती है। जीवन रेखा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कमजोर हो तो कम उम्र में मृत्यु हो सकती है।

उपाय

दोनों (स्त्री व पुरूष) को स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी चाहिये। व्यायाम उपयोगी होगा। शिवजी की पूजा करें तथा आटे की गोलियां मछलियों को खिलाएं।

5. दाई भौंहे के ऊपर माथे के ठीक बीच नहीं किन्तु थोड़ा दाहिनी ओर (काला तिल बुध व गुरू का प्रभाव छाती पर दांई ओर नीचे साक्ष्य तिल)।

पुरूष

इस तिल का विशेष प्रभाव नहीं परन्तु शहद के रंग का तिल हो तो व्यक्ति सिद्धांतवादी, मेधावी, मेहनती होता है और पर्याप्त धनार्जन करता है। बातूनी लोगों तथा चालबाज स्त्रियों से दूर रहना चाहिये। किसी पर एकाएक भरोसा न करें।

स्त्री

ऐसा तिल हो तो स्त्री जातक लंबी आयु पाती है और धन, वैभव से सम्पन्न होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपाय

हरिवशं पुराण का पाठ करें। पीपल को सींचे।

6. दोनों भौंहो के ऊपर बीचो–बीच काला तिल (शुक्र, बुध और मंगल का प्रभाव छाती पर बांई ओर साक्ष्य तिल)।

पुरूष

इस तिल वाले जातक को उम्र के शुरूआती और मध्यकाल में कष्ट रहता है। उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी पर बुढ़ापे में परिश्रम का फल मिलेगा और हालत सुधरेगी। मधुवर्णी तिल होने पर 35 से 45 की उम्र के दौरान कोई गंभीर बीमारी हो सकती है।

स्त्री

इस तिल वाले जातक को किसी रिश्तेदार या इष्ट मित्र से धनप्राप्ति का योग बनता है। आधी आयु सुख से बीतती है पर तीसवें साल में दुर्घटना के कारण मृत्यु का योग बनता है। यह टल जाए तो आगे कोई खतरा नहीं है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपाय

फीरोजा या माणिक पहनें, हनुमानजी की पूजा करें, हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें, उनके मंदिर में प्रसाद चढ़ाएं, शुक्र व बुध की शांति हेतु कन्याओं को खाना खिलाएं, कद्दू का दान करें, निर्धनों की सहायता करें, उपासना विशेषकर मंगल मूर्ति बजरंगबली की करें।

7. ललाट के बांई ओर मध्य भाग में काला तिल (शुक्र व मंगल का प्रभाव साक्ष्य तिल छाती पर बांई तरफ पसली के नीचे)।

पुरूष

इस तरह के तिल वाले जातक को लगभग 40 वर्ष की आयु में मस्तिष्क ज्वर या अन्य कोई मस्तिष्क रोग की संभावना, किन्तु ध्यान रखा जाए तो संकट टल सकता है। अगर मधु के रंग का तिल लालिमा लिये हुए तिल हो तो व्यक्ति अड़ियल, फिजुलखर्च और धुन का पक्का होगा। भोग विलास के साधन विपुलता से उसे उपलब्ध रहेंगे। वासना में डूबा होने के बावजूद मिलनसार होने के कारण व्यक्ति को समाज में आदर मिलेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्री

ऐसा तिल होने पर स्त्री बेशर्म होगी और खुद ही अपनी संतान का नाश करेगी। तीस की उम्र के पश्चात उसका स्वभाव और भी खराब हो जाएगा तथा वह पति से भी ईर्ष्या करने लगेगी।

उपाय

मंगल को शांत करने हेतु हनुमानजी की पूजा श्रेष्ठतम उपाय है, विशेषतः पुरूषों के लिये। स्त्री को युवती रहते ही लक्ष्मीजी की उपासना आरंभ कर देना चाहिये। विधवाओं की मदद, दूध व दूग्ध उत्पादों का दान भी लाभप्रद होगा।

8. बांई भौंहे के कोने पर ऊपर की ओर काला तिल (शनि का प्रभाव)।

पुरूष

काले तिल का विशेष प्रभाव नहीं होता किन्तु तिल मधुवर्णी हो तो व्यक्ति धनाढ्य होगा और साथ ही महाकामी तथा विलासी भी होगा। उसकी किसी से भी नहीं निभेगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्री

ऐसे तिल वाली स्त्री अत्यंत कलहप्रिय व दुष्ट होती है। वह सबकी सहानुभूति खो देती है। उसे किसी छूत का रोग भी लग सकता है।

उपाय

शनि की शांति के लिये पन्ना धारण करें। पुरूष अपनी काम वासना को वश में करने हेतु संयम से रहें। भगवान शिव का ध्यान करें। लोहा, तेल, चिमटा, काली गाय, कंबल दान में दें। स्त्रियां अवैध यौन संबंधों से बचें, शुभ कार्य करें तथा शिव सहस्त्र नाम का जप करें।

9. दाहिनी भौंह के बीच के भाग से थोड़ा ऊपर काला तिल गुरू व मंगल का प्रभाव दांई पसली के नीचे साक्ष्य तिल।

पुरूष

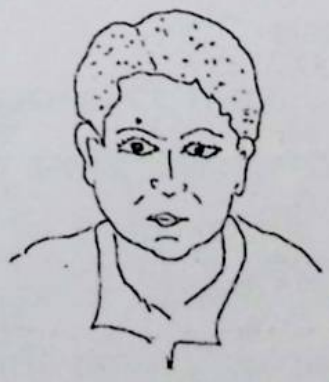

जातक परोपकारी और इतना दानवीर होता है कि सारा धन समाप्त हो जाता है। यात्रा में दुर्घटना का अंदेशा रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्री

स्त्री में कल्पनाशीलता होगी। पति उसके प्रति पूर्णतः समर्पित रहेगा। एक संतान की कम उम्र में ही मृत्यु हो जाती है, अन्य संतानें स्वस्थ रहती है।

उपाय

चूंकि ऐसे तिल के अशुभ प्रभाव अधिक होते है, अतः अशुभ प्रभाव न हो ऐसा जतन स्त्री–पुरूषों को करना चाहिये। बच्चों की सेहत पर ध्यान दें, सत्कर्म में रत रहे। हनुमानजी की अराधना करें।

10. दोनों भौंहों के लगभग बीच में किन्तु तनिक बांई ओर थोड़ा उपर काला तिल (शुक्र तथा मंगल का प्रभाव साक्ष्य तिल छाती के दाएं भाग में)।

पुरूष

व्यक्ति फिजूलखर्ची और व्यसनों के कारण बर्बाद होकर दुःख उठाता है। उम्र के अंतिम पड़ाव में आर्थिक तंगी तथा लंबी बीमारी से उसका अन्त होता है। शहद के रंग का तिल हो तो शुभ फल देगा। तब जातक उच्चकुलोत्पन्न, संपन्न और परोपकारी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है तथा समाज में आदर प्राप्त करता है।

स्त्री

ऐसे तिल वाली स्त्री का स्वभाव रूखा होता है किन्तु बच्चों का लालन–पालन वह पूरी निष्ठा से करती है। उसे माइग्रेन की शिकायत प्रायः रहती है। प्रथम पति से न निभ पाने पर दूसरा विवाह करती है और दूसरा विवाह सफल रहता है।

उपाय

शुक्र व मंगल की शांति के उपाय करें तथा तत्संबंधी रत्न धारण करें।

11. बांई भौंह के कुछ ऊपर काला तिल (मंगल व चंद्र का विशेष प्रभाव सीने में बांई ओर साक्ष्य तिल)।

पुरूष

इस तिल का कोई खास फल नहीं होता पर यदि तिल मधुवर्णी हो तो व्यक्ति अत्यधिक बेसब्र होता है व अपना नुकसान स्वयं कर बैठता है। कारोबार में जल्दबाजी के कारण उसे हानि होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्री

ऐसा तिल होने पर लड़की अल्पायु में विवाह करने की भूल कर बैठती है और ताजिंगी वित्तीय कठिनाइयों का सामना करती है।

उपाय

मोती और मूंगा पहने, परन्तु विशेषज्ञ रत्न पारखी व ज्योतिषी से सलाह लेकर सोते समय रात्रि में दूध व पानी से भरे पात्र सिरहाने रखें और प्रातः कीकर के वृक्ष की जड़ में ड़ाल दें।

12. बांई भौंह के कनपटी की ओर वाले छोर पर ऊपर की ओर काला तिल (बुध व मंगल का प्रभाव बांए नितंब पर साक्ष्य तिल)।

पुरूष

30 और 40 के बीच की आयु में पेट संबंधी रोग होंगे। शहद वर्णी तिल हो तो जातक के गुरू संबंध अच्छे नहीं होते। विवाहोपरांत स्थिति सुधरती है और सारी समस्याएं सुलझ जाती है फिर तो किस्मत चमक उठती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्री

ऐसी स्त्री चंचला होती है। उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। उसे कुष्ट रोग होने की आशंका रहेगी।

उपाय

बुध के दुष्प्रभाव होते है। यदि वह लग्न में हो तो मंगल को भी दूषित करता है और मंगल भी अनिष्टकारी हो जाता है। इसलिए बुध की शांति करना आवश्यक है। साबुत मूंग का दान करें। दुर्गा सप्तशती का पाठ करें। नाक छिदवाएं तथा फिटकरी से दांतों को साफ करें। कन्याओं की सेवा करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नैत्रों का आकार तथा व्यक्ति का चरित्र

आंखों के आकार के आधार पर भी व्यक्ति के चरित्र, चाल–चलन आदि का अनुमान लगाया जा सकता है।

कई व्यक्ति ऐसे होते है जिनकी आंखें सामान्य से

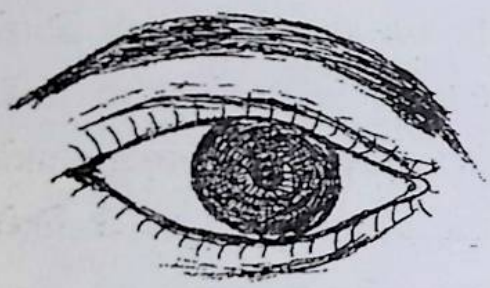

आकार में काफी बड़ी होती है। ऐसे लोगों के अंतस में कई विचार एक साथ चलते रहते है। अतः वे उलझन में रहते है कि क्या करें, क्या न करें। प्रायः ये लोग किस भी काम को उसके अंजाम तक नहीं पहुंचा पाते है। किन्तु नित नवीन विचार चूंकि इनके मन मे आते है सो ये दूसरों को नेक सलाह दे सकते है। ऐसे जातक अच्छे दोस्त होते है। कुशल प्रबंधक भी हो सकते है। कल्पना के आकाश में चूंकी ये विचरण करते है सो लेखन, कला, काव्य रचना में भी अपनी पहचान बना सकते है।

जिनके नयनों में हल्की गोलाई होती है वे आंखों की खूबसूरती के होते हुए भी हठी होते है। आजाद ख्याल

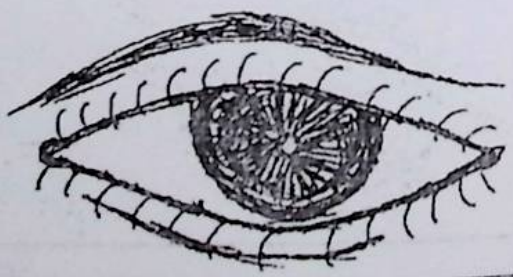

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के होते है, इसलिये सबमें घुलमिल जाते है। ये मेहनती और जजबाती होते है। अतः कभी नुकसान व धोखा खाते है। ये कभी निराश रहते है तो कभी बहुत चंचल होते है।

कुछ व्यक्ति ऐसे होते है जिनकी आंखें तिकोनी सी लगती है। ऐसे लोग झग्ड़ालु किस्म के होते है और उनके मनमाफिक कोई बात या काम न हो तो हर किसी से उलझते है। यदि सामने वाला भारी पड़े तो उसके प्रति घृणा की आग में जलते रहते है। व्यर्थ की बकवास करके वे दूसरों को चुप करा देना चाहते है। राजनीति इनके लिये माकूल जगह होती है।

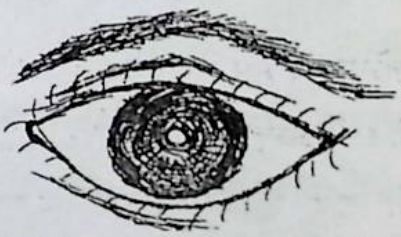

सुंदर वर्तुलाकार जैसे नेत्रों के स्वामी कुशल जासूस और सैन्य अधिकारी बन सकते है। से सूक्ष्मदर्शी और बातचीत से लोगों पर छा जाने में माहिर होते है। सोच समझ कर ही कोई काम हाथ में लेते है और उसे हर हालत मे पूरा करके ही दम लेते है। इनके मन की थाह लेना बड़ा मुश्किल होता है।

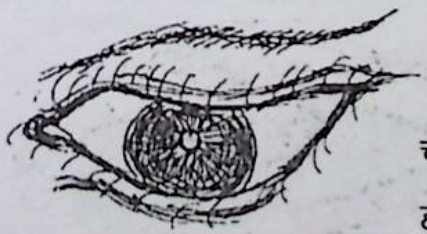

अर्धचंद्र जैसी आंखों वाले जातक चतुर, छली तथा शोषक प्रवृत्ति के होते है। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से अनुचित लाभ उठाते है। औरतों पर ये बुरी नजर रखते है। और ड़रा धमकाकर या लालच देकर उन्हें अपनी हवस का शिकार बनाने से नही डरते। ऐसी आंखें जिस स्त्री की होती है उसकी यौनेच्छा अतृप्त ही रहती है।

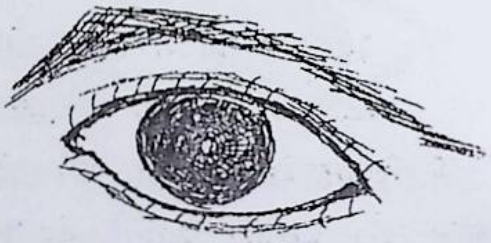

जिनकी आंखें ढ़लवां जैसी नीचे की ओर ही देखती है वे लोग मेहनत से जी चुराने वाले तथा कामटालू होते है। दूसरों से जलते और तुनक मिजाज होते है। एकाएक खुश तो कभी अकारण नाराज हो जाते है। फिर भी कभी सनक मे कोई काम करने लगें तो उसे पूरा करके ही छोड़ते है।

कुछ व्यक्तियों की आंखें चौड़ी होती है। ये लोग खुशतबीयत, बुद्धिमान व तेजी से काम निपटाने वाले होते है। अपने जैसे लोगों से ही मित्रता करते है। इनसे जो भी सम्पर्क मे आता है वह कुछ न कुछ ग्रहण कर फायदे में रहता है।

किन्तु चौड़ाई भी आवश्यकता से अधिक हो तो दुर्गुण बन जाती है। ऐसा होने पर इंसान मूर्ख, लालची, अड़ियल और दूसरों की प्रगति से दुःखी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ की आंखे संकुचित और छोटी होती है। ऐसे लोग

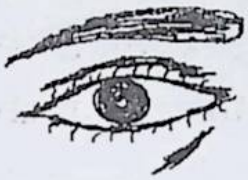
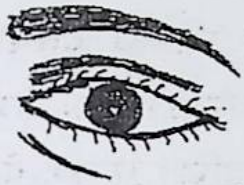

संकोची तथा अंतर्मुखी होते है। ये कायदे–कानून से चलते है। सभा–संगत में ये असहज हो जाते है। ऐसा स्वभाव प्रायः उन्हें सनकी बना देता है। प्रायः एक ही जैसा काम करते ये जीवन व्यतीत कर देते है, मगर अपनी इस कमी पर काबू पा लें तो ये लोग कुशल वैज्ञानिक, शिक्षक, वकील आदि हो सकते है।

कुछ जातकों की आंखे

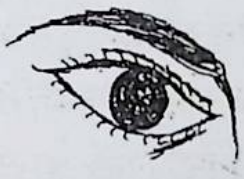

ऐसी लगती है मानों एक दूसरे से कुछ दूर हों। ये लोग मिलनसार और खुले विचारों के होते है। इनके स्वतंत्र विचार होते है। न ये किसी की आलोचना करते है न कोई करे तो उस पर ध्यान देते है। इनकी यह कमजोरी ही कही जाएगी कि ये स्वयं को ज्यादा काबिल समझते है। ऐसा न समझे तो ये जीवन में बहुत आगे बढ़ सकते है।

उपरोक्त के विपरीत कुछ लोगों की आंखें एक दूसरे से

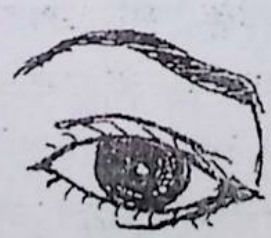

ज्यादा नजदीक होती है। ऐसे जातक अन्य लोगों का सामना करने से कतराते है। किसी न किसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की चुगली, शिकायत या निंदा करना इन्हें अच्छा लगता है। अंतर्मुखी होते हुए भी खुद को बहिर्मुखी साबित करने की कोशिश करते है, लेकिन वस्तुतः वे हीन भावना से ग्रस्त रहते है। इनसे घनिष्ठता स्थापित करने के बाद ही इन्हें ठीक से समझा जा सकता है।

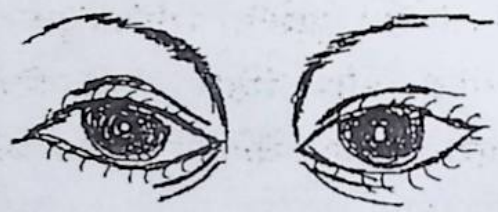

कुछ ऐसे भी होते है जिनके नेत्र नाक के अधिक निकट होते है। ये व्यक्ति को दुष्टता, संकीर्ण–स्वार्थी विचारों तथा वाचालता का संकेत देते है। अपनी कुटिल भावनाओं को ये दूसरों के सामने प्रकट नहीं करते, इस वजह से लोग इनसे छले जाते है। दूसरों को मुसीबत में देखकर खुश होते है। एक बात और है इनकी आंखे यदि एक सीधी रेखा में न होकर नाक की ओर झुकी सी हो तब तो इन पर भूलकर भी विश्वास नहीं करना चाहिये।

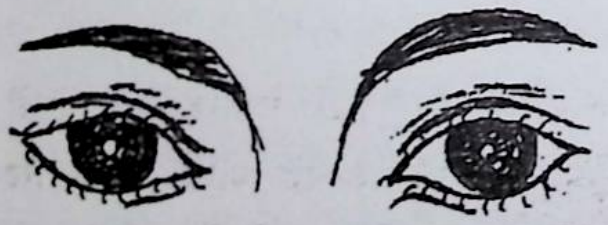

चंद आंखों की निचली पलक के निकट एक खूबसूरत सा उभार होता है और नैत्रों में भी हल्का सा उभार दृष्टिगत होता है। ऐसे लोग का आचरण साफ सुथरा होता है और वे मनोभावों को छिपाते नहीं है। ये प्रेमीजीव होते है भले ही इन्हें बदले में प्यार न मिले।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोलमटोल नयनों के स्वामी लकदक वाली चमकती जिंदगी जीते है। ये गुस्सैल स्वभाव के होते है। ऊपरी पलक नीचे तक आती हो तो ये अधिक भरोसेमंद होते है। सुखी, सुविधायुक्त जीवन जीना चाहते है। इनकी आंखें और चेहरा दोनों खिले-खिले से लगते है। इनका मुख्य काम बेफिक्र होकर मौज मस्ती करना है।

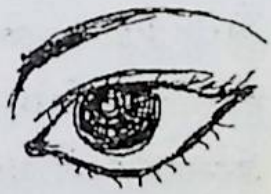

जिनके नेत्रों का झुकाव ऊपर की ओर हो वे आशावादी तथा खुद्दार होते है। ये जातक व्यर्थ के मसलों में टांग नहीं अड़ाते तथा दूसरों को त्रस्त नहीं करते। उन्हें कोई छेड़े तो यथा संभव अप्रभावित रहते है, पर हद पार हो जाए तो रौद्ररूप धारण कर लेते है।

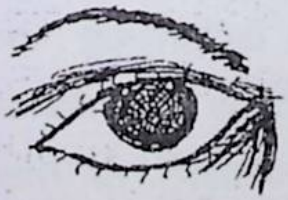

इसी प्रकार कुछ लोगों की आंखे नीचे की ओर झुकी रहती है। ये लोग हर बात में सतर्कता बरतते है और सोच विचार के पश्चात कोई काम करते है। ये छिद्रान्वेशी होते है इसलिये हर किसी की आलोचना करते है। निराशवादी होते हुए भी ये टूटते

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रिश्तों को जोड़ने में कामयाब होते है। इन गुणों के कारण ये नेतृत्व के कामों के लिये बहुत योग्य होते है।

कुछ नेत्र एकदम समतल होते है। ये संवेदनशील लोग किसी पर भी दुःख आने पर स्वयं परेशान हो जाते है। प्रायः किसी न किसी कारण से ये परेशान ही रहते है और कुछ नहीं तो आने वाली काल्पनिक मुसीबत को लेकर व्यग्र हो उठते है। इनका जीवन सरल होता है और प्रायः जीवन मे कोई उन्नति नहीं कर पाते।

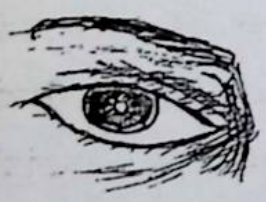

कतिपय नेत्र अंदर की ओर धंसे से लगते है वे लोग अपने मनोभावों को प्रकट नहीं करते। इनकी भावनाओं को उत्तेजित करके कोई काम इनसे नहीं करवाया जा सकता। आंखों की यह गहराई यदि नासिका के निकट हो तो ये कुशल निशानेबाज या खिलाड़ी बन सकते है। ऐसे लोग स्थिर विचारों के तथा सहिष्णु होते है। इनसे संपर्क में आने वाले भी इनसे प्रभावित होकर इनके जैसे ही बन जाते है। ये त्वरित निर्णय लेते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कई आंखों में अजीब सी चमक होती है। ये लोग मस्त स्वभाव के, खुशमिजाज होते है। तनाव पूर्ण वातावरण को ये लोग आनंदमय बना देते है। ये प्रेरणादायी व्यक्ति जीने की कला जानते है।

किन्हीं–किन्हीं लोगों की आंखे भावनाशून्य व स्थिर होती है। जो दुःखों से दुःखी या जीवन से उबे हुए लोगों की निशानी है। हो सकता है बहुत अच्छा समय देख चुकने के बाद कोई विपत्ति आई हो जिसके कारण से ऐसे बन जाते है। ये आमोद–प्रमोद से चिढते है और क्रोध मे आएं तो अनर्थ कर ड़ालते है। एकांकी जीवन इन्हें रास आता है।

कुछ लोगों की आंखे झपकती ही रहती है यानी अस्थिर रहती है। इनका चरित्र दुर्बल तथा स्वभाव में शैतानियत होती है। ये एकाग्रचित्त नहीं हो सकते। लोगों की कमजोरियों का ये फायदा उठाते है। कुल मिला कर ये महाफरेबी, दोगले और बेईमान होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आंखों की पुतिलियों का रंग

रंगों के मामले मे आंखों की पुतलियां मुखाकृति विज्ञान के दृष्टिकोण से अधिक महत्व की होती है। इनका रंग काला, भूरा, स्लेटी, हरा या नीला हो सकता है। पुतलियों के रंगों के आधार पर जातक के स्वभाव का खुलासा निम्नानुसार किया जा सकता है –

यामवर्णी नेत्र

काली नेत्रों वाले लोग मेघावी, कर्मठ, गतिशील, शीघ्र निर्णय लेने वाले और दूरदर्शी होते है। इनमें उद्यमशीलता होती है। दरअसल एक प्रतिशत लोगों की ही सही अर्थो में काले नेत्र होते है। अधिक संख्या के लोगों की आंखे हल्की भूरी होती है परन्तु सरसरी तौर पर देखने में वे यामवर्णी दिखाई देती है।

भूरे–बादामी नेत्र

अगर आंखें गहरी भूरी (डीप ब्राउन) हो तो जातक अच्छा साथी होगा। प्रायः स्वयं ही अपना जीवन साथी ये लोग ढूंढ लेते है। ये अपने परिजनों के प्रति समर्पित और दोस्तों के प्रति निष्ठावान होते है।

भूरापन हल्का हो तो व्यक्ति में किंचित अस्थिरता होगी। ऐसे लोग जल्दबाज व प्रेम में बेफिक्र तथा लापरवाह होते है। दूसरों को इनके व्यवहार से सुख पहुंचता है क्लेश या इसकी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन्हें चिंता नही रहती। इन्हें आत्मसंतोषी या आत्मकेंद्रित कहा जा सकता है।

स्लेटी नेत्र

स्लेटी नेत्र के लोग कुशाग्र बुद्धि तथा कल्पनाशील होते है। इनकी देह आकर्षक होती है परन्तु ये अपने साथी की यौन पिपासा को शीघ्र शांत नहीं कर सकते। ग्रे नयनों वाली स्त्रियों काम वासना के मामले में शीघ्र उत्तेजित हो जाती है और शीघ्र शांत भी हो जाती है। ये लोग ऊपरी तौर पर शांत परन्तु अंदर से चौकन्ने होते है।

हरित नेत्र

ऐसी आंखों के मालिक अन्वेशक होते है व अपने काम को शीघ्रता से निपटाते है। ये विचारों पर पर्दा ड़ाल कर रखते है। इसलिये दूसरों के लिये पहेली बने रहते है। कोई इन्हें अस्थिर समझ सकता है पर ये धीर और मेधावी होते है। प्यार में स्थिरता बरतते है।

नीलवर्णी नेत्र

नीलिमायुक्त नेत्र व्यक्ति के व्यतिव में चार चांद लगा देते है, परन्तु ये लोग असंतुलित और अस्थिर होते है। प्रेम का ये दिखावा करते है। इनके जीवन का मकसद खाओं, पियों ओर मौज करों रहता है। नीली आंखों स्त्रियों की कामेच्छा जल्दी शांत नहीं होती।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्रियों की विशेष रेखाएं

शीघ्र विवाह रेखा

यदि स्त्री जातक के पैर की तर्जनी के पर्व में एक साफ रेखा हो तो उसका विवाह जल्दी होता है और उसे अपने पति से भरपूर प्यार प्राप्त होता है।

अखंड़ सौभाग्य रेखा

जिस प्रकार पुरूषों में एड़ी से मध्यमा तक जाने वाली उर्ध्व रेखा भाग्यशाली होती है उसी प्रकार स्त्रियों के मामले में यह उन्हें सुख, वैभव तथा अखंड़ सौभाग्य प्रदान करती है। हाथ में भाग्य रेखा के समान ही पैर की उर्ध्व रेखा का प्रभाव होता है। यह रेखा जितनी सुस्पष्ट, गहरी, अटूट और लंबी होगी उतनी ही अधिक मगलमय होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसकी कुछ सहायक रेखाएं भी हो सकती है जो सौभाग्य में वृद्धि करती है। किन्तु यदि अंत में पहुंचते–पहुंचते रेखा द्विखंड़ित हो जाए तो उसका असर कम हो जाता है और अगर वह सांप की जीभ जैसी हो जाए तो सारे शुभ प्रभाव नष्ट होकर यह रेखा दुःख, संताप व असफलताओं की ओर धकेलती है।

पति सुख रेखा

यह रेखा एडी से नहीं बल्कि तलवे के बीच से उगकर मध्यमा तक जाती है। ऐसी जातक को प्रचुर सुख, ऐश्वर्य व पति का सुख मिलता है। इतना ही नहीं ऐसी स्त्री से विवाह करके पति का भाग्य भी संवर जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संबंध विच्छेद रेखा

शंकु रेखा का वर्णन पहले किया जा चुका है। स्त्री जातक की एड़ी में ऐसा शंकु का आकार बनाती रेखा हो तो उसे तलाक रेखा माना जा सकता है। ऐसी

जातक जरा–जरा सी बात पर तलाक के लिये उद्यत हो जाती है। यदि इसके साथ अन्य अमंगलकारी निशान हों तो वह चरित्रहीन भी हो सकती है। यदि सभी शुभ चिन्ह हो केवल यह रेखा हो तो पति का चाल–चलन संदिग्ध हो सकता है।

एक से अधिक चिन्ह और उनका प्रभाव

यह आवश्यक नहीं है कि हमारे पदतलों में एक ही शुभ या अशुभ चिन्ह हों। कई हो सकते है, नही भी हो सकते है। किन्तु यदि एक से अधिक शुभ चिन्हों की युति हो तो जातक को दुहरा–तिहरा लाभ अवश्य प्राप्त होता है। इसी प्रकार एक से अधिक अशुभ निशान अथवा रेखाएं हो तो उनके दुष्प्रभाव में भी इजाफा होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगूठा रेखा

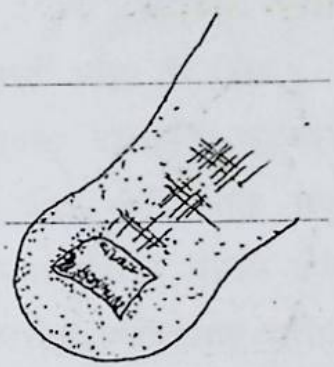

अंगूठा चाहे वह हाथ का हो या पैर का शरीर के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंगों में से एक है। अंगूठा चुपचाप अपना काम करता रहता है, किन्तु अधिसंख्य लोग उसे महज शरीर का एक पुर्जा मानते है। पश्चात्य विद्वानों ने उसकी अहमियत को पहचाना है। वस्तुतः मानव शरीर अपनी ऊर्जा आंखों और कानों से ग्रहण करता है किन्तु उसका माध्यम अंगूठा ही होता है। रास्ते पर चलते हुए संभावित खतरे का आभास सबसे पहले अंगूठे को होता है और वह इसकी सूचना मस्तिष्क को देता है। हमारे शरीर मे आक्सीजन पांच स्थानों में स्थायी रूप से रहती है, जिनमें पांव का अंगूठा एक है।

अंगूठे का नाप

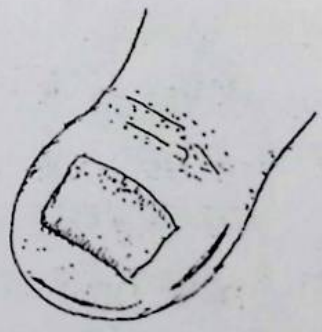

अंगूठे का घेरा (परिधि) चार अंगुल, चौड़ाई 2 अंगुल और लंबाई 3 अंगुल हो तो वह आदर्श अंगूठा माना जाएगा। नापने हेतु अंगूठे के इर्द-गिर्द एक डोरी लपेट ले, फिर अंगुलियों से उसे नाप लें। मध्यमा अंगुली के बीच के पर्व की चौड़ाई या चारों उंगलियों की कुल चौड़ाई का चौथाई भाग (1/4) को एक अंगुल मान सकते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोल अंगूठा

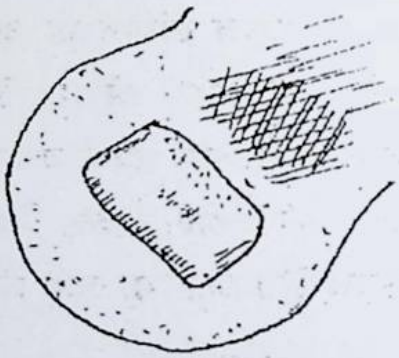

सांप के फल जैसा गोल, मांसल, मजबूत, स्वच्छ अंगूठा गोल और शुभ होता है। यदि उसके नाखून तांबे जैसी लालिमा से युक्त हो तो व्यक्ति शासकीय अधिकारी हो सकता है। ऐसा अंगूठा स्त्री जातक का हो तो वह भी पति परायण और वैभवशालिनी होगी।

नर्सों वाला अंगूठा

अंगूठे पर गठीली नर्सें दिखाई दे तो यह अशुभ है। ऐसे अंगूठे वाले पुरूष जातक बीमार और निर्धन होते है और स्त्री जातक व्यभिचारीणी तथा अभागी होती है।

छोटा अंगूठा

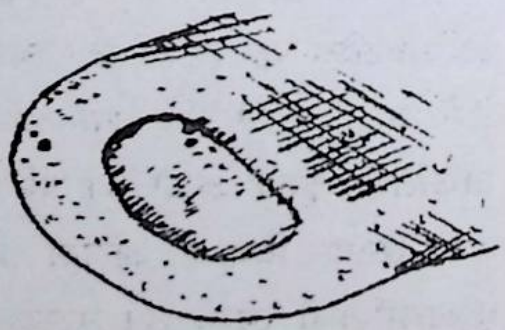

छोटा अंगूठा भी अशुभ है। जातक चालाक और धोखेबाज होता है। जातक जीवन में बहुत कष्ट पाता है और स्त्री जातकों पर भी यही बात लागू होती है। जातक दब्बू भी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बड़ा अंगूठा

औसत लंबाई से अधिक लंबा अंगूठा भी अशुभ होता है। ऐसे लोग अनाप-शनाप खर्च करके मुसीबत मोल लेते है। प्रेमी के लिये अमंगलकारी होती है। वह कुलटा भी हो सकती है।

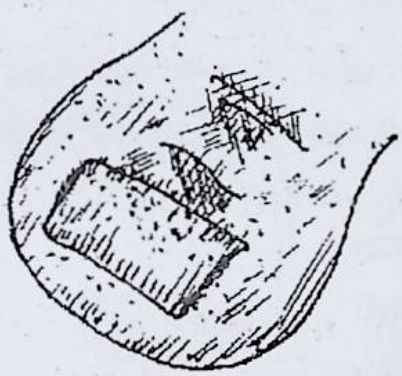

मोटा अंगूठा

बहुत मोटा अंगूठा भी अशुभ माना गया है। ऐसे जातक अभागे, शारीरिक दृष्टि से बलशाली, अभिमानी पर मानसिक दृष्टि से कमजोर होते है। अधिक मोटे अंगूठे वाली स्त्री के विधवा होने की संभावना रहती है।

टेढ़ा अंगूठा

टेढ़े-मेढ़े बेड़ोल अंगूठे अशुभ माने जाते है। शरीर का कोई भी अंश अविकसीत या वक्र होना उचित नहीं है। ऐसे जातकों में हीन भावना होती है। ये अनैतिक कृत्य करते है। यदि स्त्री जातक का ऐसा विकृत अंगूठा हो तो वह कुलनाशिनी होती है। उसके पति व पुत्र जीवित नहीं रहते।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चपटा अंगूठा

चपटे अंगूठे वाले रतिक्रिया के योग्य नहीं होते। ये असंवदेनशील तथा विपरीत लिंगधारी के प्रति क्रूर होते है। स्त्री जातक वैधव्य को प्राप्त होती है या उनकी संतान होती नहीं या उसकी संताने जीवित नहीं रहती है।

चौकोर अंगूठा

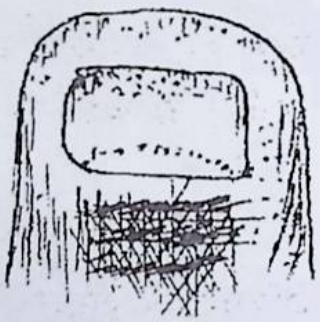

चौकोर अंगूठे वाले जातक सफल व्यवसायी होते है। वे मेहनत से नहीं डरते। संक्षेप में ये कर्मयोगी होते है। किन्तु यदि अंगूठे पीतवर्णी और खुरदरे हो तो वे आलसी हो जाते है। स्त्रियों के लिये वर्गाकार अंगूठा होना और भी खराब होता है। वे ईर्ष्यालु, झग्ड़ालू होती है।

टूटा अंगूठा

किसी दुर्घटना में अंगूठा टूट-फूट जाए तो और बात है किन्तु यदि जन्म से ही अंगूठा भग्न हो तो वह अशुभ श्रेणी में रखा जाएगा। ऐसे लोग प्रायः नपुंसक होते है। स्त्री जातक का अंगूठा टूटा और लालवर्ण का हो तो वह ईर्ष्या वश अपने कुटुंब का हनन करने वाली होती है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैर की अंगुलियां

तर्जनी अर्थात अंगूठे के बगल वाली अंगुली अंगूठे से लंबी न हो तो शुभ है – अन्य अंगुलियां क्रम से 1/8 भाग कम होनी चाहिये। यह एक सामान्य सूत्र है यथा संभव अंगुलियों का आकार इस नाप सूत्र के अनुरूप हो तो अच्छा है। अंगूठे के बाद वाली यानी तर्जनी क्रियाशील अंगुली है जो अंगूठे का साथ देती है।

दूसरी मध्यमा निर्देशक का कार्य करती है, तीसरी अनामिका संतुलन का दायित्व निभाती है सर्वाधिक संवेदनशील है। इसका संबंध किड़नी से होता है। सबसे छोटी कनिष्ठिका को आवश्यकता का प्रतीक माना गया है। अंगुलियां जितनी सुंदर, स्निग्ध, कोमल होगी उतना ही उत्तम फल व्यक्ति को मिलेगा।

पुरूषों की अंगुलियां

रूखी, शुष्क, खुरदरी, छोटी, बेड़ोल, अंगुलियां हो और नसें उभरी हुई दिखें तो जातक दास वृत्ति ही करेगा और निर्धनता मे जीवन गुजार देगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तर्जनी बड़ी और अंगूठे से आगे जाती हो तो जातक और शूरवीर होता है।

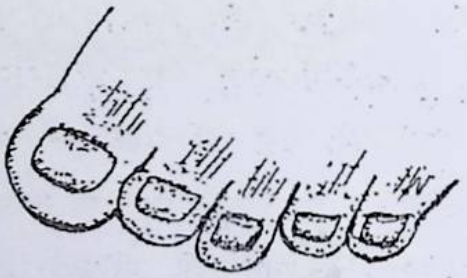

तर्जनी छोटी दुःखदायी होती है।

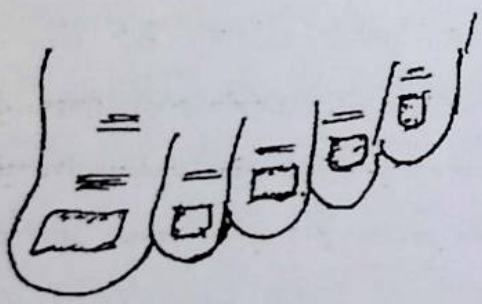

वह अंगूठे के बराबर हो तो मध्यम फल देती है।

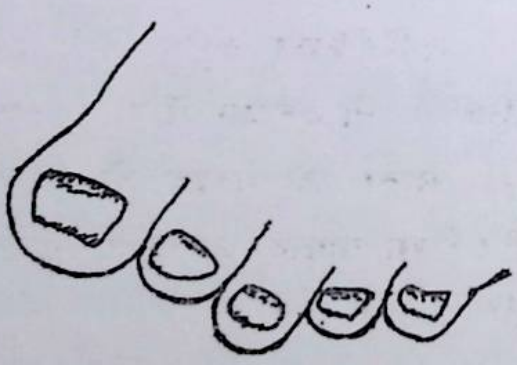

मध्यमा अंगूठे से बड़ी हो तो जातक की पत्नी शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

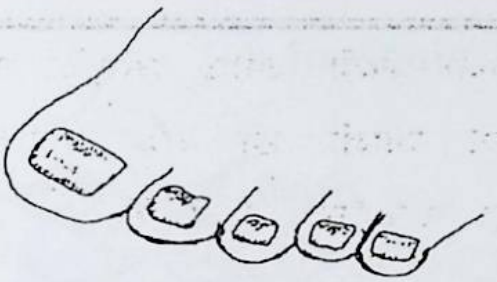

अनामिका अति लघु हो तो व्यक्ति परस्त्री भोगी होता है।

कनिष्ठिका भी औसत से छोटी हो तो भी व्यक्ति पराई स्त्रियों पर कुदृष्टि डालता है और स्व स्त्री की उपेक्षा करता है।

तर्जनी मोटी और पुष्ट हो तथा अनामिका लंबी हो तो पुरूष सुखी व धनाड्य होगा।

कनिष्ठिका बहुत छोटी और लाठी जैसी कड़क, मोटी, चौड़ी हो तो बचपन में ही जातक की माता का देहांत हो जाता है। ऐसा जातक माता को दुःख ही देता है।

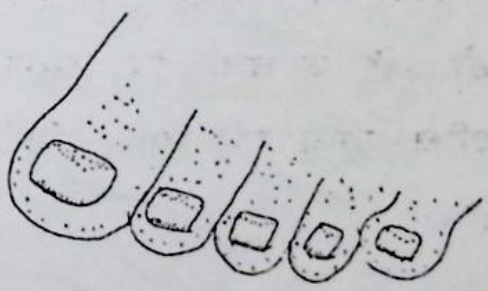

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्रियों की अंगुलियां

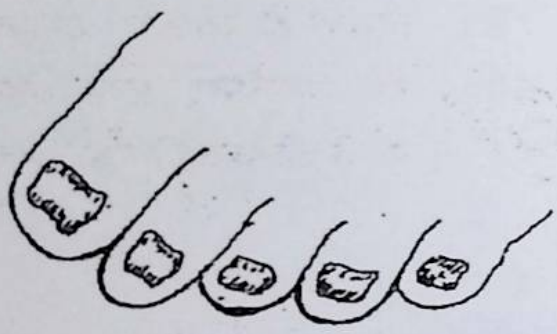

तर्जनी अंगूठे से आगे निकली हो तो स्त्री व्याभिचारी होगी। ऐसी स्त्रियां या तो पतिग्रह का त्याग करती है या उस पर हुकूमत चलाती है। इनकी गृहस्थी कलहपूर्ण होती है।

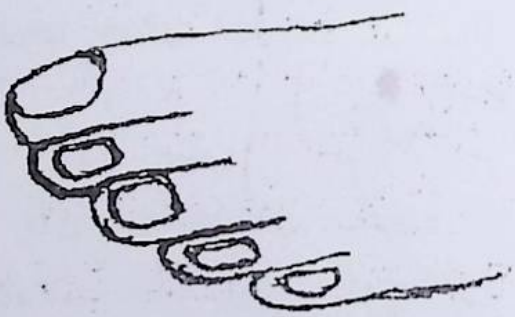

यदि महिला के पावं की अंगुलियां सीधी, गोलाई लिये हुए, एक दूसरे से मिली हुई हो, नाखून पतले और छोटे हो तो वह राजसी वैभव का उपयोग करती है।

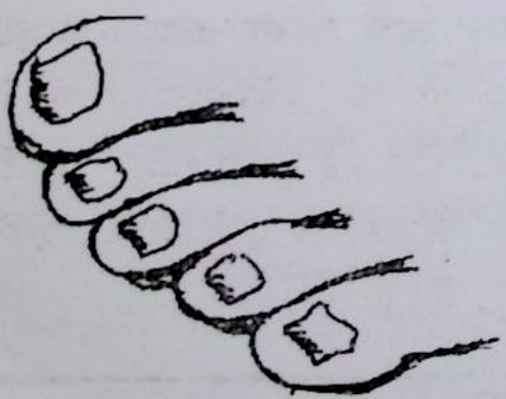

पैर सुचिक्कन हो, पदतल और नाखून तांबे के रंग के हो, अंगुलियां सघन हो, उनके सामने के भाग ऊंचे नजर आएं तो स्त्री ऐश्वर्यशाली होती है और अपने पति का भी भाग्यवर्धन करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

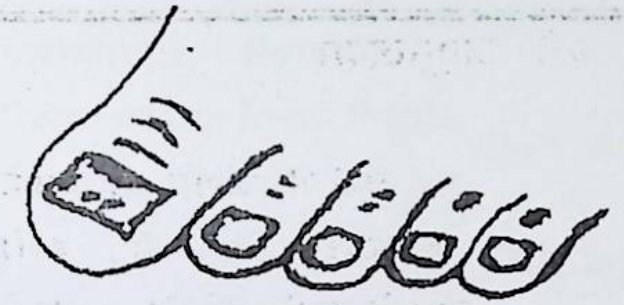

अगर अंगूठा अति विस्तृत हो तो स्त्री विधवा हो जाएगी। उसका पति अल्पायू होगा और पत्नी ही उसकी मृत्यु का कारण होगी।

जिस महिला की एड़ी चपटी हो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता।

एड़ी ऊँची हो तो वह भ्रष्ट चरित्र होगी तथा यदि एड़ी बहुत बड़ी हो तो आजन्म दुःख भोगती है। अगर पैर सूखे हो जैसे मांस ही नहीं हो तो उसका भी भाग्य ठीक नहीं होता।

जिस स्त्री की पांचों अंगुलियां एक के उपर एक चढ़ी हुई हो वह पतिहन्ता होती है और पर पुरूष की हो जाती है। उसके कई आशिक होते है।

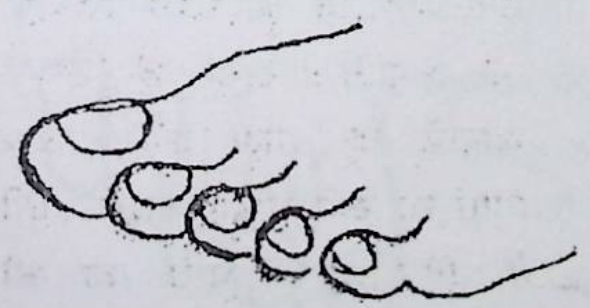

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

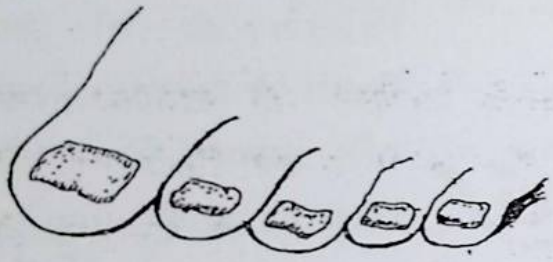

जिसकी अनामिका अंगुली चलते समय धरती पर न टिकती हो वह पतिहन्ता होती है। इसी प्रकार कनिष्ठिका जमीन पर न टिके तो स्त्री पति की मृत्यु के उपरांत दूसरा पुरूष ढूंढ लेती है। मध्यमा धरती पर न टिके तो स्त्री के तीन पति होते है और वह चौथा पुरूष प्राप्त करती है। अनामिका और कनिष्ठिका दोनों छोटी हो तो स्त्री पति विहीन होती है। वह अपने सुसराल, मायके का तथा स्वयं का नाश करती है।

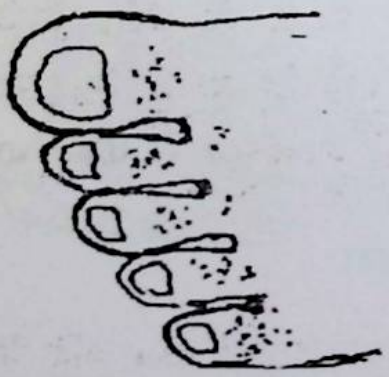

जिसकी अनामिका छोटी हो वह झग्ड़ालू स्त्री होती है।

जिसकी सभी अंगुलियां बहुत छोटी लगें वह स्त्री अल्पायु होती है।

जिसकी मध्यमा अंगुली अंगूठे से आगे निकले वह निःसन्देह दुःशीला व दुर्भाग्य पीड़ित होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैरों की अंगुलियों के नाखून

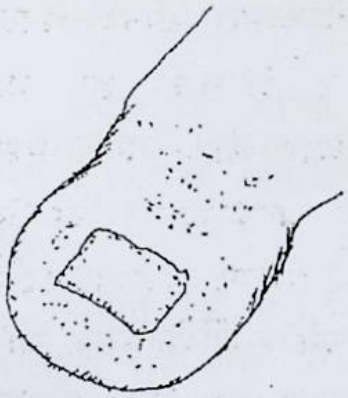

अच्छे नाखूनों की खासियत यह होती है कि वे लाली लिये हुए हों, गोलाई में हो, खाल में धंसे न हो, बीच का हिस्सा थोड़ा उभरा हुआ हो, पतले, कोमल हों। नखों में अलग–अलग रंग के धब्बे होते है जो अच्छा या बुरा फल देते है। इनके 9 रंग बनाए गए है, जिनसे लालिमायुक्त को श्रेष्ठ स्वीकार किया गया है।

इसी प्रकार कटे–फटे, टूटे–फूटे, खाल में धंसे, चपटे, कुरूप, शुष्क नाखून द्रारिद्रय को प्रदर्शित करते है। ऐसे जातक सुखी नहीं होते और अपनी ही गलतियों से कष्टों को न्यौता देते है।

पैर के नाखूनों में सफेद चिन्ह उचित नहीं है। यदि पैर पर कालिमा हो तो भाई बंधुओं से बैर हो जाता है, व्यक्ति वैरागी हो सकता है।

नाखून सीप या शंख वर्ण के हो तो भी अशुभ है। जातक अहंकारी होता है और हवाई किले बनाता रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाखून खाल में धंसे हुए हो तो व्यक्ति चाहे जितना संपन्न हो वह भिखारी जैसा और रोता–कलपता ही दिखेगा।

सफेद धब्बे यदि अंगूठे पर हो तो जातक एकांतप्रिय, सौम्य तथा दूरदर्शी होता है।

तर्जनी पर श्वेत धब्बे हो तो भी व्यक्ति बुद्धिमान, शांत और उच्च विचारों वाला होता है। वह अकस्मात् धन कमाता है।

मध्यमा पर ऐसा निशान हो तो विदेश में उसकी मृत्यु पानी में डूबने से होती है।

कनिष्ठिका में जातक संगीतज्ञ, सुविज्ञ और सफल ज्योतिष होता है। श्वेत बिन्दु उसे सही रास्ते से भटकाती है।

गुलाबी रंग के नाखून हर दृष्टि से उत्तम होते है। जातक सुखी समृद्ध होता है। प्रत्येक अंगुली पर गुलाबी धब्बे भी अलग–अलग तरह से शुभ परिणाम देते है।

चटक लाल रंग रक्त चाप व हृदय विकार का द्योतक है। यदि जातक के नखों की जड़ में लाल धब्बे हो तो वह जहर खा लेता है। ताम्रवर्णी लाल शुभ होता है। अंगूठे पर लाल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धब्बे हो तो व्यक्ति खूनी कातिल होगा। सभी अंगुलियों पर लाल धब्बे विविध प्रकार के दुष्परिणाम उत्पन्न करते है।

नखों पर पीला रंग पांडु रोग व रक्त दोष की सूचना देता है। सभी अंगुलियों पर पीले धब्बे भी अमंगलकारी होते है।

नीला रंग रक्त कैंसर या रक्त विकार का प्रतीक है। नीले नाखूनों पर श्वेत धब्बे स्त्री–पुरूष दोनों के लिये अशुभ है।

हरे नाखून आमाशय की खराबी दर्शाते है। जातक की मानसिकता भी विकृत होती है। अंगुलियों पर धब्बे भी तरह–तरह के विकार पैदा करते है।

नाखूनों पर इंद्रधनुषी रंग हो तो जातक की कई शल्य क्रियाएं होती है। विशेषतः अंगूठे और तर्जनी पर इंद्रधनुषी रेखाएं विपत्ति व रोग की सूचक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगूठे व अंगुलियों के चिन्हों का महत्व

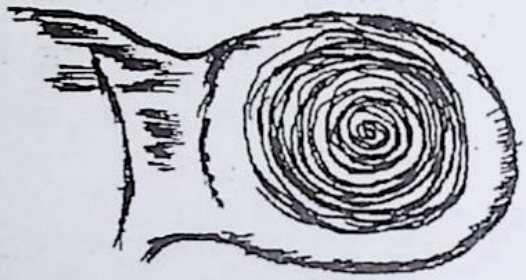

अंगूठे पर चक्र का निशान हो तो व्यक्ति राजा, मंत्री व नेता बनता है। अंगूठे के साथ-साथ अन्य अंगुलियों पर भी चक्र हो तो विविध शुभ फल प्राप्त होते है।

अंगूठे या दोनों अंगूठों के अग्रभाग पर चक्र हो तो विरासत में संपत्ति प्राप्त होती है।

अन्य अंगुलियों के अग्र भागों में भी चक्र होने पर विभिन्न माध्यमों, तरीकों से धन की प्राप्ति होती है।

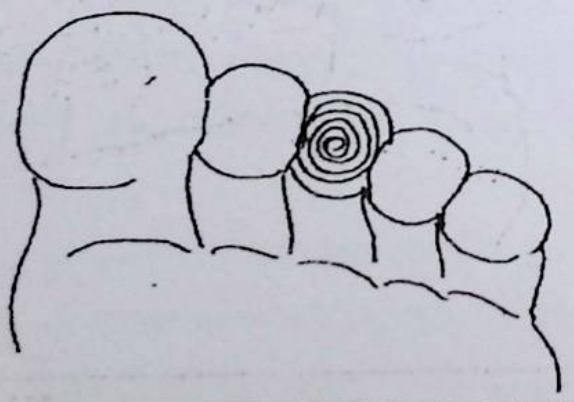

केवल मध्यमा पर चक्र चिन्ह अशुभ होता है। यदि पांचों अंगुलियों पर चक्र का निशान हो तो जातक चक्रवर्ती सम्राट बनता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगूठे के अग्र भाग पर शंख चिन्ह हो तो भी काफी परेशानियों, विवादों के बाद पैतृक संपत्ति मिलती है।

अन्य अंगुलियों पर शंख चिन्ह धन की हानि ही कराता है या अन्य प्रकार से स्वत्रंत होता है।

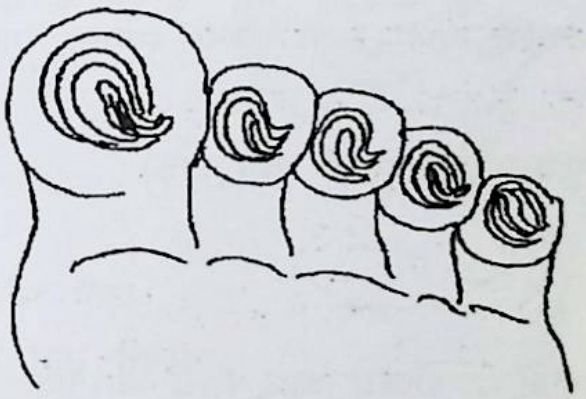

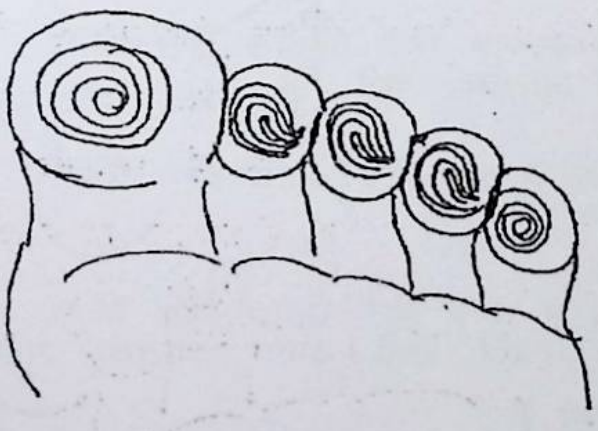

तीन अंगुलियों पर शंख चिन्ह मंगलमय होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सीप का चिन्ह कमोबेश लाभदायक ही होता है। तीन अंगुलियों पर सीप चिन्ह वाला जातक शातिर किन्तु अच्छा कारीगर होता है। पांचों अंगुलियों पर सीप चिन्ह वाला व्यक्ति गुणी तथा कार्य क्षमता वाला होता है।

पुरूष के पांवों की एड़ी

एड़ी यदि नरम, गोल, सुड़ौल हो लक्ष्मी उस पर प्रसन्न रहती है। ऐसे जातक को स्त्री वर्ग बहुत पसन्द करता है।

एड़ी बड़ी हो तो जातक लंबी आयु पाता है।

छोटी एड़ी वाला जातक गरीब होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ उठी हुई एड़ी हो तो व्यक्ति शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है।

कठोर एड़ी हो तो संतान सुख पूर्ण रूपेण नहीं मिल पाता।

स्त्री

सम आकार की एड़ी स्त्री के लिये सब प्रकार से शुभ है।

चौड़ी एड़ी हो तो स्त्री कुरूप होगी।

ऊंची एड़ी वाली स्त्री पर पुरूषगामिनी हो सकती है।

लंबी एड़ी वाली स्त्री सदा दुःख सहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पद पृष्ठ लक्षण (Upper Surface)

पुरूष

पैरों का उपरी भाग उन्नत, मांसल और कोमल शुभ माना जाता है जबकि नसयुक्त, पसीने से गीला, केशयुक्त हो तो उसे अशुभ माना जाता गया हैं। ऐसे जातकों को परिश्रम का पूर्ण लाभ नहीं मिलता।

स्त्री

जहां तक स्त्रियों के पग पृष्ठ का संबंध है उसे नसें न दिखाई दे, पसीना न आए, सतह चिकनी हो, सुकोमल हो तो शुभ है। ऐसी महिला ऐश्वर्य शालिनी होती है। यदि पांव की पीठ बीच में नसें हो तो वह दरिद्र होगी। पैरों की पीठ पर रोंए हो तो वह भाग्यहीन रहेगी और नसें दिखे तो वह भटकती ही रहेगी।

पदतल लक्षण

पुरूष

पदतल या तलुए स्वेद रहित, लालिमापूर्ण, कमल सद्दश कांतिवाले, स्निग्ध, कोमल और सुड़ौल हो तो जातक को राजाओं जैसा धन धान्य प्राप्त होता है। उसके चलने पर यदि छाप जमीन पर पड़े और उर्ध्व रेखा प्रकट हो तब तो कहना ही क्या है। इसके विपरीत मेले कुचले, फटी एड़ियों वाले,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेड़ोल हो वह जातक कुल नाषक होता है। तलवा चक्री मिट्टी सा मटमेला हो, तो जातक ब्रह्म हत्या करता है। पीले रंग का हो तो वह अगम्या स्त्री (गुरू पत्नी, निकट संबंधी) से कुकर्म करता है। काले तलवों वाले जातक मद्यप होते है। तलवा भूरापन लिये हो तो जातक अभक्षभक्षी होगा। तलवा बीच में रिक्त हो तो स्त्री कार्य में सेवा करते हुए मरता है। आगे से तलवा बहुत चौड़ा, पीछे से सूखा हो, अंगुलियां बिखरी हुई सी हो तो व्यक्ति दरिद्र होता है।

स्त्री

मांसल, चिकने, स्वेदहीन, ज्यादा गर्म नहीं ऐसे तलुए वाली स्त्रियों को सुफल प्राप्त होता है जबकि रंगहीन, सूखे, कड़े, सूप जैसे तलवे ज्योतिष शास्त्रियों के अनुसार महिलाओं के लिये अशुभ होते है। गुलाबी रंगत वाले तलुए हो तो स्त्री पति की प्यारी होती है। यदि तलुए परस्पर मिलते नजर आए तो स्त्री पुत्रवती होती है। पदतल यदि काला हो तो अमंगलकारी होता है। सफेद रंग से महादुःख आ पड़ने की तीव्र संभावना होगी। सूपाकार तलवे हो तो स्त्री दासी जैसा जीवन यापन करती है।

पदतल चिन्ह

पुरूषों के पदतल में शुभ चिन्ह

अंकुश, अर्ध चंद्र, अष्टदल, अमृत कुंभ, अग्नि कुंड, अश्व, उर्ध्व रेखा, इंद्र धनुष, कमल, कच्छप, केले का पेड़,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुंड़ल, कुलिश, कल्पवृक्ष, खड्ग, गदा, गोपद, गृह, गुलाब, चक्र, चतुष्कोण, चंवर, छत्र, जामून, तरकश, तोमर, त्रिकोण, दण्ड़, दीपक, धनुष, नन्दी, नवकोण, नाव, नक्षत्र, नौ लपटों वाला सूर्य, पत्तियां, पुष्प, पूर्ण चंद्र, पद्म, पृथ्वी, वंशी, बछड़ा, गौ, उद्यान, वाण, बिजली, बेलपत्र, मयूर, मंदिर, मकर, माला, मछली, मुकुट, मूसल, यव, यज्ञवेदी, यमदंड़, रथ, लता, वलय, वज्र, वृक्ष, विष्णु, वीणा, पंखा, शंख, शस्त्र, शक्ति, सिहांसन, सिंह, स्वास्तिक, कलश, हल, गज, हंस, हरिण, दीपक, छाता, हिड़ोला, स्तंभ, मृदंग, ध्वज आदि सब शुभ चिन्ह होते है और किसी न किसी रूप में श्रेष्ठ फल की इनसे प्राप्ति व्यक्ति को होती है। कभी–कभी इनमें से कोई चिन्ह दांए तो कभी बांए पैर मे अधिक फलदायक होते है। ये चिन्ह अस्पष्ट, धुंधले हो या अन्य रेखाओं द्वारा कटे हो तो इनका सुफल कम होता है या जीवन के उत्तरार्द्ध में प्राप्त होता है। राज चिन्ह जैसे –शंख, चक्र, गदा, रथ, ध्वजादि अगर बाएं पैर मे तलवे में हो तो परेशानी की बात है। जातक पददलित किया जाएगा या उसका आरंभ अच्छा पर अंत बुरा होगा। तिल कहीं शुभ तो कहीं अशुभ फलकारक होता है।

इनके विपरीत उल्लू, कुत्ता, सियार, कौवा, पाश, भैंसा, चूहा के चिन्ह अशुभ ही होते है। सर्प शेषनाग के प्रतीक के रूप में सुफल देता है, कभी जातक को क्रोधी, चुगलखोर और धमंड़ी बनाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्री

स्त्रियों के लिये उपरिवर्णित शुभ और अशुभ निशान वैसे ही प्रभाव ड़ालते है। ओढ़नी का चिन्ह विवाहिता नारियों के लिये सौभाग्य सूचक होती है।

पिंड़ली (जंघा) और घुटने

जांघ छोटी और सम होनी चाहिये। यदि पिंड़लियां, जांघों की तुलना में लंबी हो तो यह शारीरिक दुगुर्ण है और दरिद्रता को दर्शाने वाली बात है। जिस प्रकार हाथी की सूंड़ ऊपर से मोटी होती है और नीचे आते–आते पतली होती जाती हैं। मानव की टांगे भी लगभग ऐसी ही हो तो व्यक्ति वैभवशाली होगा। वराहमिहिर का कथन है कि जांघ अत्यधिक स्थूल, बहुत पतली, सपाट, चपटी, पृष्ठ भाग में मांस रहित हो तो यह दोष है। जांघ का हिस्सा पिंड़लियों के बराबर हो तो इसे सामान्य कहेंगे, पिंड़लियों पर बहुत बाल होना या बिल्कुल ही न होना, दोनों दोष है। टांगों के केश कड़े, रूखे और हाथ फेरने पर गड़ते हो तो व्यक्ति क्रूर और निर्दयी होगा। रोंए बिल्कुल न हो तो पुरूष वैरागी या दार्शनिक हो जाता है जो संसार से पूर्णत विमुख हो जाता है। स्त्रियों की पिंडलियों पर काले रोएं अशुभ होते है। ऐसी स्त्री को पति का स्नेह नहीं मिलता किन्तु यदि निर्लोमा होना दुर्गुण है तो रोमहीन होना यानि रोंए हों पर दिखाई न दे तो यह गुण है। आचार्य समुद्र की मान्यता हे कि स्त्रियों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की पिंड़लियों पर हरें रंग की नसों का दिखाई देना भी गुण है।

घुटने ऐसे हो कि सीधे खड़े होने पर वे मांस से ढ़के दिखाई दें, ऊपर उभार वाले न हो, किन्तु उपर मास का आवरण होना चाहिये। घुटनों को बड़ा या छोटा कैसे माना जाय इस पर स्पष्ट मत प्राप्त नहीं है। यहां हमें सामान्य ज्ञान से अनुमान करना होगा। फिर भी बहुत बड़े घुटने जो चलने पर आपस में टकराएं तो यह दुर्गुण ही है।

यदि दोनों पैरों के घुटने सम न हो कर ऊँचे नीचे हों, कमजोर, मांसहीन दिखें तो ऐसा व्यक्ति सदा सर्वथा सेवक ही रहेगा – स्वामी नही बन सकेगा। वराहमिहिर तो लिखते है कि जिस व्यक्ति के घुटनों पर मांस न हो वह घर से दूर मृत्यु को प्राप्त होता है उसका कोई निकट संबंधि अंतिम समय में उसके पास नहीं होता।

किस्मत वालों के घुटनों की अस्थि बड़ी नहीं होती, जबकि मांसहीन हों तो व्यक्ति आजीवन पत्नी की हां में हां मिलाता रहता है।

स्त्री के घुटनों में अस्थि अदृश्य हो, वे मांसल व गोल हो तो वह सौंदर्य और सौभाग्य की स्वामिनी होती है। यदि घुटनों की हड्डी ढ़ीली हो और ऊपर से नीचे सरकती दिखें तो स्त्री दरिद्र होती है। कुल मिलाकर उसके घुटने सुगठित होने चाहिये भले ही कम मांसल हो। उसके घुटनों पर बालों का होना अशुभ होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जंघाओं का जहां तक सवाल है स्त्रियों की जांघे पुरूषों की अपेक्षा कुछ अधिक मांसल हो तो भी शुभ है। कहा गया है कि वे कोमल, कछुए की तरह सामने खड़े होने पर दिखें, पहलवानों की भांति मांस पेशियां न उभरे पर सुड़ौल व ऊँची दिखें, यही पर्याप्त शुभ है। पर वे रोएंदार न हो और उन पर नसें नहीं होनी चाहिये।

हाथ

शरीर के सभी अवयवों के काम बंटे हुए है, किन्तु सामान्य दृष्टि से विचार करने पर कोई निरक्षर भी कहेगा कि हम हाथों से काम करते है अर्थात हाथों के काम दिखाई देते है चाहे वह विशाल दुर्गो, मंदिरों, पिरोमिड़ों, भवनों का निर्माण हो या महीन कारीगरी हो हम किसी से मिलते है तो हाथों से प्रणाम या हेंडशेक करते है, पैरों से नही। इसलिये हाथों की अपनी भूमिका है। हम ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन कर रहे है और हथेली जिस पर रेखाएं होती है, हाथ का ही एक भाग है। चूंकि हस्त रेखा विज्ञान पर अन्यत्र विचार किया गया है, यहां हम हाथों के विषय में ज्यादा कुछ नहीं कहेंगे।

शरीर के चौदह अंग एक बराबर होना चाहिये, जिनमें से दोनों हाथ भी है। बारीकी से देखने पर हम अनुभव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करेंगें कि आकार, लंबाई, मोटाई या गोलाई में इनमें सूक्ष्म या अंतर प्रायः होता है। किन्तु दोनों हाथों का आकार एक सा होना शुभ होता है। महान लोगों के हाथ आम लोगों से किंचित लंबे होते है जो एक विशेष गुण है, जैसे श्रीराम को आजानुबाहु (जिनकी बाहें घुटनों तक आती है) कहा गया है। इसी प्रकार शरीर के चार अंगों को चतुक्षसम होना चाहिये जिनमें दोनों हाथों के अंगूठे और अंगुलियां शामिल है। ये अंगुलियां बराबर है या नहीं इसका परीक्षण दोनों हथेलियों को नमस्ते मुद्रा में जोड़ने से हो सकता है। पता चल जाएगा कि दोनों हाथों की अनामिकाएं, मध्यमाएं आदि एक बराबर (सम) है अथवा नहीं। एक सी हो तो शुभ है अन्यथा अशुभ। दस अंगों को वृहत यानी बड़ा होना चाहिये। हाथ इस सूची में भी है। दस अंगों को पद्म अर्थात गुलाबी होना चाहिये। इसमें भी हथेलियां शामिल है। एकदम गुलाबी न भी हो तो उसके जितना निकट हो उतना ही अच्छा है। अग्नि पुराण के अनुसार भी दस अंगों का रंग कमल जैसा अर्थात लालिमायुक्त होना चाहिये जिनमें हाथ व नाखून सम्मिलित है। नौ स्थान ऐसे है जो धूल आदि के कारण शीघ्र मैले हो जाते है और उनमें हाथ भी है। शायद इसीलिये पैरों को हाथ का मैल कहा गया है अर्थात हाथों से मेहनत करके, जिसके कारण हाथ मेले हो जाते है, धनार्जन किया जा सकता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अच्छा हाथ हम किसे कहेंगे। उत्तर-बहुत सरल है अगर हाथ को प्रथम द्रष्टया देखने पर शरीर के अनुपात से हथेली और अंगुलियों की संरचना लंबी और आकर्षक लगे तो वह हाथ बढ़िया है। छोटे हाथ कमतर भाग्य की सूचना देते है। स्त्रियों के हाथ नाजुक पत्ते जैसे हो तो अच्छे कहे जाएंगे। भविष्य वक्ता को चाहिये कि जातक की हथेली अपने हाथ में लेकर उसकी बनावट, मांस के उभार, रेखाओं अंगुलियों का लचीलापन आदि का ध्यान से मुआयना करें। अच्छे कर पृष्ठ के लोग सफल और सर्वमान्य होते है। यदि कर पृष्ठ पर रोम न हो तो जातक कोमल हृदय और उदार होता है। स्त्रियों का कर पृष्ठ यदि मांस रहित और रोएंदार हो तो दुर्भाग्य उसके हाथ लगा रहेगा।

हथेली बहुत लाल, नीली, पीली या ज्यादा सफेद हो तो वह अशुभ है। गुलाबी ताम्रवर्ण हो तो वैभव का संकेत देती हैं। अंगुलियों का लंबी होना शुभ है। हाथ किंचित उष्ण होने चाहिये। हथेली उबड़-खाबड़ न हो। नाखून गुलाबी हो। हाथ में पसीना आना उचित नहीं है। अनामिका व तर्जनी लगभग एक समान भी हो। पर्याप्त लंबाई की अंगुलियां हमेशा शुभ होती है। अगर उनके पोर या पर्व भी लंबे हो तो गुणों में वृद्धि होती है। जातक लंबी उम्र पाता हैं और अपने परिजनों की प्रगति देखता है। अंगुलियों के फलादेश निम्जानुसार होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लंबी साफ, चिकनी अनामिका व्यक्ति को कार्य में सफलता दिलाती है।

यदि यह अंगुली कुछ टेढ़ी या बांकी हो तो जातक सट्टे–लाटरी में हारता है।

कनिष्ठिका सामान्य से कुछ ज्यादा लंबी हो तो जातक दीर्घायु व कुशल रचियता होता है।

यदि यह अंगुली पहली अंगुली (तर्जनी) के बराबर हो तो व्यक्ति राजनीति में सफल होता है और छल–कपट करने में संकोच नहीं करता है।

कनिष्ठिका के नाखून वाला पर्व अंदर की ओर झुका हो, अनामिका की ओर मुड़ा हो या हथेली की तरफ झुका हो तो व्यक्ति धोखेबाज हो सकता है। वस्तुतः इस अंगुली का नख पर्व यदि किसी भी ओर मुड़ जाए तो जातक में कोई न कोई चारित्रिक दोष आ जाता है।

अंगुलियां लंबी हो परन्तु आपस में मिली न रहती हो तो जातक किसी न किसी प्रकार की विरह व्यथा सहता रहेगा।

छोटी अंगुलियां दरिद्रता दर्शाती है।

अंगुलियों को जोड़ने पर बीच मे कोई छिद्र न हो तो व्यक्ति खूब कमाता है, छिद्र हो तो खर्च भी अधिक करता है।

हथेली ऊंची नीची हो तो जातक गरीब तथा क्रूर प्रकृति का होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुली और नाखून के पीछे भी कुछ रेखाएं होती है और मनुष्य के भविष्य को वे भी प्रभावित करती है। ये पतली हो तो बेहतर है।

यदि तर्जनी के पीछे अनेक चौड़ी रेखाएं हो तो व्यक्ति रात्रि में चैन से सो नहीं सकता। ड़रावने सपने देखता और प्रायः रात्रि में ही मरता है।

मध्यमा के पृष्ठ भाग में अनेक अनकटी रेखाएं चोरी का माल दिलाती है। ऐसे जातक रात में सक्रिय रहते है और स्त्री सुख के लिये विचरते रहते है।

अनामिका के पीछे एक या अधिक साफ रेखा हो तो आदमी धार्मिक व दयालु होता है।

कनिष्ठिका के पीछे मोटी रेखा या अधिक रेखाएं होने पर जातक हिंसक व अन्यायी होता है।

अंगूठा तो हम सब की चैतन्य शक्ति का केन्द्र बिन्दु है। इसका आकार, रेखाएं कई रहस्यों पर से पर्दा उठा देती है।

अंगूठे को अंगुलियां से दूर मोड़ने पर यदि 90 अंश के करीब का कोण बने तो व्यक्ति स्वाधीन विचारों का और धैर्यवान होता है।

इससे बड़ा कोण बने तो वह मनमानी करने वाला होगा और यदि 35 अंश का छोटा कोण बनता हो तो वह व्यक्ति सेवक बनेगा साहब नहीं।

जहां तक अंगूठे की नमनीयता का प्रश्न है यदि मोड़ने पर वह बहुत पीछे तक जाए तो जातक मिठबोला और शीघ्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मित्रता करने वाला, अंगूठा कड़ा हो और कम मुड़े तो व्यक्ति रूखा और उज्जड़ और अंगूठा इतना मुड़ता हो कि वह कलाई तक आ जाए तो जातक प्रायः सफल जुआरी होता है।

अंगूठे के पर्व भी अपनी सुघड़ता और आकार के अनुरूप फल देते है।

अंगूठे पर जौ का चिन्ह हो तो धन, मछली हो तो पुत्र, नख पर्व के बाहर नाखून की ओर एक या अधिक जौ (यव) हो तो प्रसिद्धि मिलती है।

अंगूठे के पिछली ओर जितनी स्पष्ट व गहरी रेखाएं हो उनका 20 से गुणा करें और प्राप्त गुणनफल जितनी जातक की आयु होती है।

अंगूठे की जड़ में कौवे की आकृति हो तो बुढ़ापा कष्टपूर्ण होता है। और कई खड़ी रेखाएं हो तो व्यक्ति के अनेक स्त्रियों से संबंध रहते है।

प्रत्येक अंगुली के नाखूनों के नीचे की आड़ी रेखाओं से खड़ी रेखाएं निकलना शुभ होता है।

नाखूनों को देखकर भी काफी कुछ व्यक्ति के बारे मे जाना जा सकता है पर इसकी कुछ चर्चा पूर्व में हो ही चुकी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामुद्रिक चिन्ह

पैरों पर विचार करते समय हमने अनेकों शुभ–अशुभ चिन्हों तथा जातक पर उनके प्रभावों का वर्णन किया था। वैसे ही चिन्ह हथेलियों की रेखाएं भी बनाती है और उनके भी शुभाशुभ परिणाम मिलते है।

सामुद्रिक शास्त्रानुसार 32 मुख्य चिन्ह है। छत्र, कमल, धनुष, वज्र, कूर्म, अंकुश, बावड़ी, स्वास्तिक, तोरण, वाण, सिंह, वृक्ष, चक्र, शंख, गज, समुद्र, कलश, महल, मत्स्य, यव, स्तंभ, मंदिर, कमंड़ल, पर्वत, चंवर, दर्पण, वृषभ, ध्वज, कुसुम, मयूर, माला एवं लक्ष्मी। परन्तु यह सूची अंतिम नहीं है। अलग–अलग विद्वानों ने और भी चिन्हों का विवेचन किया है।

मणिबंध और हथेली के संगम पर मछली का निशान सफलता, पुत्र व धन की प्राप्ति कराता है।

हाथ में कहीं पर भी दंड़ समेत छतरी या चंवर की आकृति हो तो व्यक्ति विश्व प्रसिद्ध, राजयोगी होता है।

अंकुश, वज्र व शत्रु चिन्ह भी जातक को समाज में ऊंचा उठाते है और इनकी आयु 80 वर्ष के आसपास होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंकुश, हाथी, बैल व सिंह चिन्ह बहुमूल्य वाहन दिलाते है।

मूकूट चिन्ह राज्य में प्रतिष्ठा, दाई हथेली के बीच तिल पुत्र दिलाता है। सर्प का आकार व्यक्ति को क्रोधी बनाता है परन्तु धन भी दिलाता है।

हाथ गौर से देखें। अगर एक भी स्पष्ट चिन्ह बनता हो, तो वह यकीनन अच्छा फल देगा। स्पष्ट का अर्थ यह है कि चिन्ह टूटा-फूटा, दूसरी रेखाओं द्वारा काटा गया न हो, अन्यथा फल में कमी होगी।

दसों अंगुलियों पर चक्र चिन्ह व्यक्ति को नरेश या प्रसिद्ध व्यक्ति बनाता है और प्रत्येक अंगुली पर सीप का निशान हो तो जातक सदा दुःख ही भोगेगा।

सार संक्षेप यह कि चिन्ह से जिस भावना या प्रकृति का आभास होता है, वैसा ही जातक का स्वभाव होता है और तदानुसार फल भी प्राप्त होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कान

कान मानव शरीर का वह अंग है जो उसे श्रवण शक्ति प्रदान करता है। इसका सीधा संबंध मस्तिष्क से होता है। मस्तिष्क में आने वाले अच्छे बुरे विचारों के बनाने में इसका योगदान रहता है। बाह्य जगत की ध्वनियों को एकत्र कर यह मस्तिष्क तक भेजता है। मानव के चेहरे पर इसकी स्थिति कनपटी के पास होती है। इसकी आंतरिक रचना काफी जटिल होती है। ध्वनि को ग्रहण करने का कार्य बाहरी कर्ण करता है और आंतरिक कर्ण ध्वनि को मस्तिष्क तक पहुंचाने का काम करता है। कानों की बनावट मनुष्य की आन्तरिक प्रबलता और दुर्बलता का स्पष्ट करती है। समय के साथ चेहरे का रंग परिवर्तित हो सकता है परन्तु कानों का रूप अपरिवर्तित रहता है। कान कें अध्ययन हेतु कान को निम्नांकित आधारों पर बांटा जा सकता है।

1. कान की स्थिति एवं आकार
2. कान के प्रकार
3. कान का छिद्र क्षेत्र
4. कान की लोर या पपड़ी वाला क्षेत्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(I). कान की स्थिति

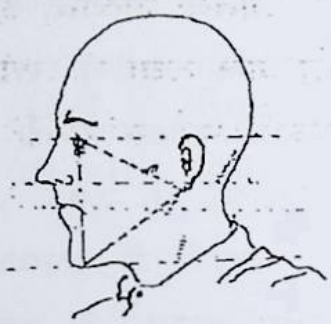

चेहरे पर कान की स्थिति तीन प्रकार से समझी जा सकती है। सामान्य ऊपर की ओर तथा नीचे की ओर, इसे समझने के लिये चेहरे के तीन अंग–आंख, ढ़ोडी और कान की लोर को मिलाते हुये एक त्रिभुज खींचा जाये तो कान की स्थिति आसानी से समझी जा सकती है।

कान के ऊंचा या निम्न होने की स्थिति में त्रिभुज की तीनों भुजाओं में विषमता होगी और सामान्य स्थिति में समता होगी।

1. उर्ध्व स्थिति

यदि कान की स्थिति ऊपर अर्थात् मस्तिष्क की ओर अधिक ऊंची उठी हुई हो तो ऐसे जातक शर्म, लज्जा, एकांत प्रियता एवं दुर्बल ह्रदय वाले होते है।

2. निम्न कान की स्थिति

कान गर्दन की ओर अधिक हो ऐसे जातक सर्तक, सावधान, शंकालु, अव्यवहारिक एवं आत्म केंद्रित होते है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. सामान्य कान

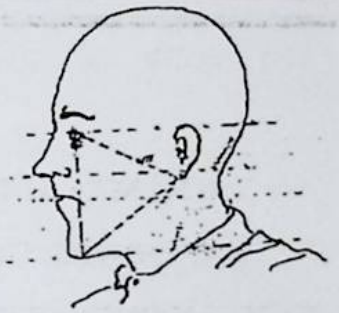

कान की स्थिति यदि सामान्य हो तो जातक सत्यनिष्ठ, स्नेही, कर्मठ, उदार, धैर्यवान तथा विवेकी होते है। ऐसे जातक किसी पर सहज विश्वास नहीं करते है।

कान का आकार

(अ) बड़ा आकार

जिन जातकों के कान बड़े होते है वे भाग्यशाली होते है। कानों का आकार बड़ा हो वे ढ़ीले एवं झूलते हो तो व्यक्ति भाग्यहीन एवं आलसी होता है तथा उसके स्वभाव में रूखापन होता है।

(ब) छोटा आकार

छोटे कान वाले जातक कायर, शंकालू, लोभी तथा आत्मविश्वास की कमी वाले होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(II) कान के प्रकार

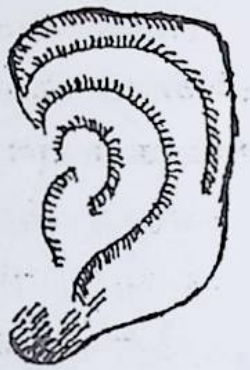

1. वर्गाकार कान

इस प्रकार के कान वाला जातक भौतिकवादी, स्वार्थी, चालाक, चतुर तथा विलासी स्वभाव वाला होता है। ये अत्यंत व्यवहारिक होते है एवं प्रत्येक कार्य समझकर करते है।

2. केश या रोम युक्त कान

ऐसे जातक भोग विलास से युक्त जीवन जीवन पसंद करते है। अपनी बुद्धि को अनुपयोगी कार्यो में लगाते है। इनमें कामवासना की प्रधानता होती है।

3. सामान्य से चौड़े कान

ऐसे जातक जिनके कानों की चौड़ाई सामान्य से अधिक दिखाई दे तो व्यक्ति में श्रवण शक्ति की तीव्रता ग्रहण करने की शक्ति होती है। अवसरवादिता, अनुदान, अहंकारी, शंकाशील एवं अविश्वास्तता जैसे गुणों का समावेश इनमें होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. गोलाकार कान

ऐसे जातक आदर्तो के गुलाम होते है। जीवन को अनुशासनबद्ध तरीके से जीवन पसंद करते है। भाग्यशाली, धनी और दया भाव वाले गुण इनके चरित्र में समाहित रहते है।

5. बाहर की तरफ निकले कान

इस प्रकार के कान वाले जातक सामाजिक क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते है। बचपन से ये संकोची तथा शर्मीले स्वभाव के होते है। लेकिन बाद में समाज के अग्रण्य नागरिक बनते है। इस प्रकार के कान नेताओं के होते है।

6. तीखे कान

कुछ कान ऊपर तथा नीचे की ओर थोड़ा तीखापन लिये होते है। ऐसे जातक दृढ़ निश्चयी होते है। साथ ही हठी भी होते है। जो चीज ये प्राप्त करना चाहते है उसे प्राप्त करके ही छोड़ते है। इनमें स्वार्थ भी दिखाई पड़ता है।

7. चपटे कान

ऐसे जातक पारिवारिक किस्म के होते है। परिवार के लिये फिक्रमंद रहने वाले एवं परिवार से अत्यंत स्नेह रखने वाले होते है। भाग्यशाली समझदार एवं दूरदर्शी होते है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. सामान्य कान

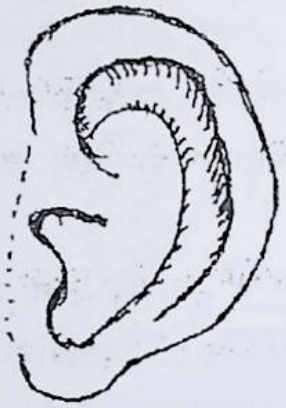

यदि कान का आकार सामान्य लंबाई चौड़ाई वाला हो तो ऐसे जातक चरित्र में सद्‌गुणों का समावेश करते है। ऐसे जातक विचारशील, कर्मठ, परिश्रमी, व्यवहारिक, सिद्धांतवादी एवं विश्वसनीय होते है।

9. सीपाकार कान

ऐसे कानों वाले जातक कामुक होते है। सुन्दर महिलाओं के कान भी इसी प्रकार के होते है।

इन प्रकारों के अलावा कान से संबंधित कुछ अन्य बातों का भी ध्यान रखना चाहिये।

1. कानों की चौड़ाई सामान्य से अधिक लंबी हो तो जातक सुख समृद्धिवान, स्वाभिमानी, नेतृत्व करने वाले एवं हठी स्वभाव के होते है।

2. कान की चमड़ी मोटी व कठोर हो तो ऐसे जातक स्वार्थी, छली, अविश्वसनीय और भौतिकतावादी होते है।

3. मांसल कान शुभ माने गये है। मांस रहित कानों वाला जातक रोगी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. बड़े तथा लंबे कान जीवन में सुख का द्योतक है।

5. कानों की चमड़ी पतली मृदु एवं स्निग्ध हो तो ऐसे जातक सर्तक, चतुर, स्नेही एवं मिलन सार होते है।

6. अधिक छोटे कान भाग्यहीन, कायर, अमंगलकारी व्यक्ति के होते है। छोटे और मोटे कान वाला व्यक्ति कजूंस सवभाव का होता हैं

7. कान किसी स्थान पर कोणिक हो तो जातक अवसरवादी, धूर्त, परिस्थितियों के अनुसार रंग बदलने वाला, मधूरवर्णी तथा वाक चातुर्य वाला होता है।

(III) कान की लोर या लोलकी

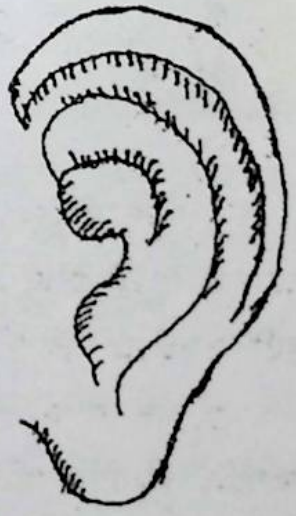

यह कान का अन्तिम छोर है जो नीचे की तरफ लटकता रहता है। इसे कान की लोर या लोलकी कहते है। इसमें स्त्रियां आभूषण विशेषकर कर्ण फूल धारण करती है। इस क्षेत्र की विशिष्ट बनावट जैविक शक्ति, यौन इच्छाओं की ओर संकेत करती है। इसकी बनावट के आधार पर आगे अध्ययन करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. कोमल लोर

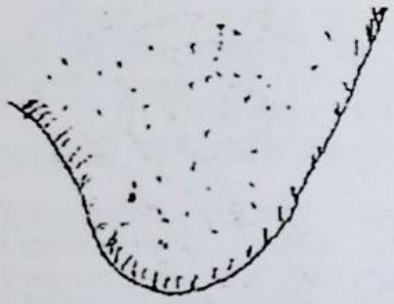

सिनग्ध कोयल, मांसल सुगठित लोर वाले जातक स्वस्थ, उच्च जीवन शक्ति, नियमों का पालन करने वाला, अक्षर चित्र, संयमता के गुणों वाला होता है। ये सौंदर्य प्रेमी भी होते है। इनके जीवन में नियमबद्धता या क्रम बद्धता का विशेष गुण होता है। कल्याण का मार्ग वे सही रास्ते पर चलकर पूर्ण करते है।

2. लंबी मोटी एवं कोनिक लोर

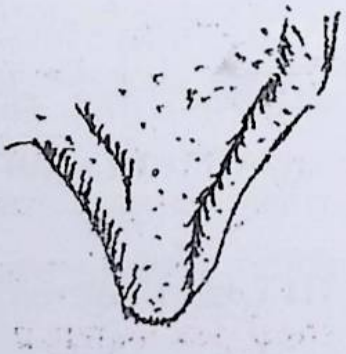

ऐसे जातक लम्पट, चंचल, हीन भावना से ग्रस्त तथा आलसी प्रवृति के होते है।

3. छोटी लोर

ऐसे जातक जिद्दी तथा पारिवारिक जीवन में परेशान रहने वाले होते है। छोटी एवं पतली लोर वाले जातक धूर्त, अस्वस्थ रहने वाले होते है। लोर का अत्यधिक छोटा होना जातक की क्रूरता एवं हिंसात्मक प्रवृत्तियों को दर्शाता है। छोटी लोर का गाल के साथ चिपका होना जातक को शंकी, घमंड़ी, स्वार्थी, कृपणता आदि गुणों को बताता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. बड़ी लोर

बड़ी लोर वाले जातक गुणी, विचारशील, परिश्रमी एवं दयावान होते है। अपने पुरूषार्थ से ये धन कमाते है। बड़ी झूलती एवं ढ़ीली लोर वाला व्यक्ति कामचोर, आलसी तथा क्रोधी होता है। बड़ी पुष्ट नुकीली लोर वाला व्यक्ति परोपकारी, क्रियाशील एवं संतुष्ट रहने वाला होता है।

5. लोर का झुकाव

यदि लोर लटकता एवं फैला हुआ होता है तो जातक जीवन के प्रति संवेदनशील होता है या जीवन के प्रति उसका लगाव बढ़ जाता है। लोर का झुकाव चेहरे की ओर हो तो भाग्योदय में देरी की ओर इंगित करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाक

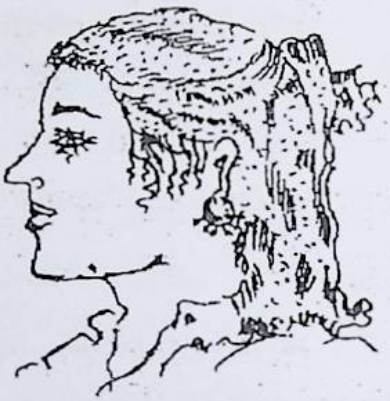

मानव के चेहरे में सर्वाधिक प्रभावशाली अंग नाक है। यह इन्द्रिय का कार्य भी करती है तथा बनावट व विभिन्न आकारों के द्वारा चेहरे की सुंदरता में चार चांद लगाती है। यदि नाक सुधड़ है तो चेहरे के दूसरे अंगों की भूमिका का अंतर हो जाती है। चेहरे को उभार देने में नाक ही होती है तथा किसी भी व्यक्ति के व्यतिव को आसानी से परिभाषित करती है। नाक द्वारा ही प्राण वायु को शरीर में पहुंचाया जाता है तथा वायु के दूषित अवयवों को अन्दर नहीं जाने देती। इसी की शक्ति द्वारा सूंघकर वस्तु स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। अनुवांशिकी नाक की बनावट में मुख्य भूमिका रखती है। माता–पिता की नाक के गुणों का समावेश संतानों में भी आता है। प्राचीन काल से ही हमारे यहां नाक को प्रतिष्ठा का सूचक माना जाता है। यहां तक की मान अपमान की स्थिति में, मान का प्रश्न भी नाक को ऊंचा मान कर ही बनाया जाता है।

प्रत्येक चेहरे पर नाक अलग–अलग दिखाई देती है। चेहरे के अनुपात में नाक छोटी, बड़ी अथवा मध्यम आकार की होती है। उसकी बनावट के आधार पर हम व्यक्ति के स्वभाव के बारें में जान सकते है। इसके सरल अध्ययन के लिये इसका वर्गीकरण निम्न आधारों पर किया जा सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

I. संधि स्थान

II. नाक का आकार तथा प्रकार

III. नासिका छिद्र या नाक का उद्‌गम स्थान

(I) संधिस्थान या नाक का उद्‌गम स्थल

दोनों आंखों के मध्य स्थान एवं ललाट अस्थि के नीचे वाले तल से नाक का संधि स्थान होता है।

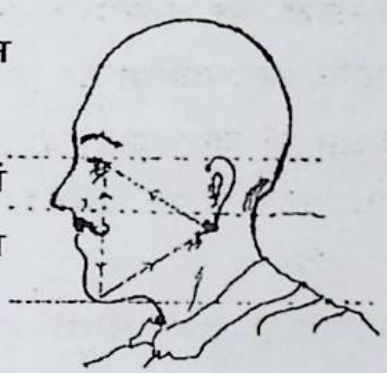

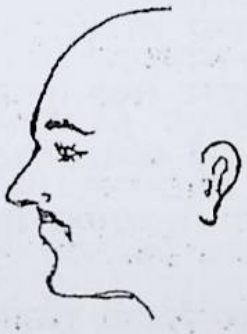

1. यदि संधि स्थान ललाट अस्थि से नीचे दबा हुआ हो तो जातक में अच्छे गुण, गंभीरता, उदारता, अध्ययनशीलता, बुद्धिमानी, सत्य निष्ठा, मुख्य रूप से दृष्टिगोचर होते है।

2. संधि स्थान ललाट अस्थि से नीचे न होकर सपाट रूप से मिला हुआ हो तब जातक में अस्थिरता, अधीरता, चंचलता व कम बुद्धिमानी को दर्शाता है।

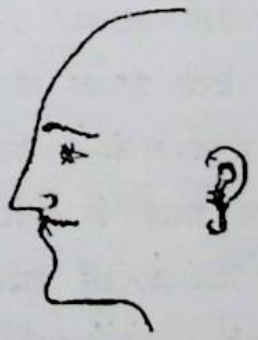

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. संधि स्थान यदि ललाट से उंचा उठा हुआ दिखाई दे तो जातक में बुरी प्रवृत्तियों जैसे गर्व, घमंड़, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, उत्तेजना, छल कपट अर्थात तमोगुणी स्वभाव की अधिकता को दर्शाती है।

(II) नाक के प्रकार

1. पतली एवं सीधी नाक

जिन जातकों की नाक पतली सरल एवं सीधी हो वे स्नेही नम्र और सहज तो होते ही है लेकिन लापरवाह, बीमार, अधीर तथा दूसरों से धोखा खाने वाले होते है। इनमें व्यवसायिक चातुर्य तो होता है परन्तु उसको ये व्यवहारिक रूप नहीं दे पाते।

2. छोटी नाक

छोटी नाक के जातक चारित्रिक दृष्टि से कमजोर तथा अस्थिर विचारों वाले होते है। इनका आर्थिक पक्ष निर्बल रहता है। आयु के मध्य भाग में विपत्तियों से घिर जाता है। जातक अपने वादों एवं वचनों पर दृढ़ नहीं रहते। सदैव चित की अस्थिरता के कारण घबराहट में रहते है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. तोते जैसी नाक

इस प्रकार के व्यक्ति निष्ठुर एवं निर्दय प्रकृति के होते है हर कार्य में गलतियां निकालने वाले, नाटकीय, धूर्त, ढ़ोंगी, चालाक, अहंकारी, सर्तक एवं व्यवहार कुशल हो सकते है। मित्रता करने पर नुकसान पहुंचा सकते है। इनको वृद्धा अवस्था में अकेलेपन का शिकार होना पड़ता है।

4. ऊपर से नीचे एकदम सीधी चौड़ी नाक

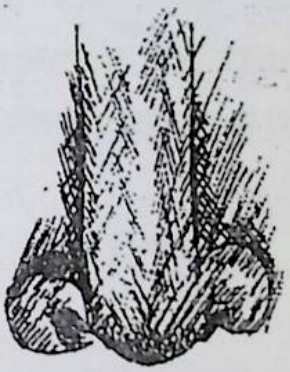

ऐसे जातक आक्रामक, भ्रमणशील संघर्षरत, हिम्मती एवं बुद्धिमान होते है। ये अपने कार्यो में बाहरी हस्तक्षेप पसंद नहीं करते, न ही किसी अन्य के कार्यो में हस्तक्षेप करते है। स्वभावतया से शांत एवं सरल होते है परन्तु अपने कार्यो के विघ्न आने पर क्रोधित हो जाते है।

5. ऊपर उठी हुई छोटी नाक

ऐसी नाक पूर्णतः विकसित नाक नहीं कहलाती है। ऐसे जातक कम बुद्धि वाले होते है तथा बुद्धि की कमी के कारण ये अविकसित तथा व्यर्थ कार्यो में लगे रहते है। स्वभाव से विनम्र तथा शालीन होने के कारण दूसरों की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेवा में अपना जीवन व्यतीत कर देते है। इनका भाग्य न अच्छा न बुरा परन्तु मध्यम श्रेणी मे आता है। परन्तु लंबी व ऊपर की ओर मुड़ी नाक जातक को विवेकी बनाती है।

6. रोमन नाक

जैसा की नाम से ही स्पष्ट है एक देश विशेष के सहवासियों की नाक इस प्रकार की होती है। ऐसे जातक व्यवहार कुशल चतुर एवं कलात्मक रूचि वाले होते है। इनमें धन एकत्र करने की क्षमता औरों से अधिक होती है।

7. चौड़ी एवं बड़ी नाक

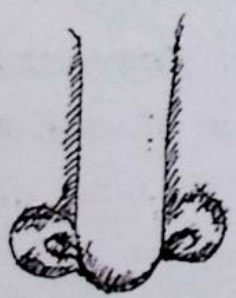

चौड़ी, बड़ी एवं आगें से तीखी नाक वाला जातक कलात्मक रूचिवाला, ईमानदार, विश्वसनीय, संतुलित, व्यवहारिक, मितव्ययी एवं वचनों एवं वादों में गंभीरता रखता है। केवल लाभ पूर्ण कार्यो में अपने धन का निवेश करता है।

8. ऊपर की ओर मुड़ी मध्यम आकार की नाक

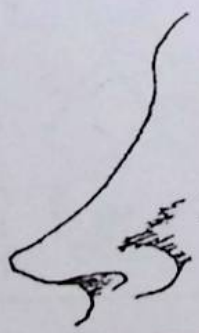

इस प्रकार की नाक महिला जातकों की सुन्दरता की दृष्टि से विशिष्टता प्रदान करती है। त्रियोचित गुण अर्थात

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्नेहशीलता, विनम्रता, भावुकता अथवा प्रफुल्लता को भी इस प्रकार की नाक परिभाषित करती है। भोग विलास इनकों प्रिय रहता है। विश्वास में ये अपना चरित्र भी दांव पर लगा देती है।

9. छोटी ओर चपटी नाक

ऐसी नाक जातक को समस्या ओर परेशानियों का पहले से आभास करा देती है। ऐसे जातक आर्थिक रूप से थोडे कमजोर, मेहनती परन्तु अपरिपक्व विचारों वाले थोड़े कंजूस प्रवृत्ति के होते है।

10. ग्रीक नाक

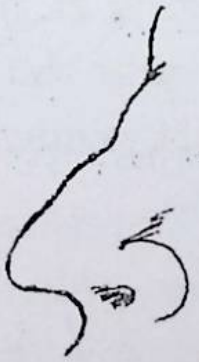

ऐसी नाक जातक के चेहरे की सुन्दरता में चार चांद लगा देती हे। अपनी नासिका के सौंदर्य के कारण विपरित लिंग वाले जातक को अपनी ओर आकर्षित करने में ये सफल होते है। ये व्यवहार कुशल, कलात्मक, परिस्कृत गुणों वाले, प्रकृति प्रेमी, मन पसंद कार्यो में पूर्ण सफलता प्राप्त करने वाले, अच्छे कवि, मूर्तिकार या शिल्पकार होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. तीखी एवं नुकीली नाक

तीखी नाक वाले जातक चिड़चिड़े, जल्द परेशान होने वाले, अविश्वसनीय, मित्रता की कसौटी पर खरे न उतरने वाले होते है। तीखी एवं नुकीली नाक वाले जातक दयाहीन, चुगलखोर, चालाक, धूर्त, निष्ठूर एवं शक्की होते है। यदि नाक तीखी होने के बजाय गोल हो तो जातक तीव्र बृद्धि, शांतिपूर्ण जीवन का इच्छूक, साहसी तथा संतानप्रिय होता हैं।

12. मध्य से उभरी हुई नाक

ऐसे जातक जिनकी नाक मध्य में उभार वाली व आगे की ओर अंत में दबी हुई हो वे महत्वाकांक्षी, विश्वासी, भावुक, आशावान, परिश्रमी तथा कर्मठ होते है। इनका मानसिक विकास अच्छा होता है तथा सैद्धांतिक रूप से ये सशक्त होते है। लेकिन अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते। अगर इनकी प्रकृति में व्यवहारिकता का समावेश हो जावे तो ये जीवन में अत्यधिक सफलता प्राप्त कर सकते है।

13. भारी तथा उद्धे नथुनों वाली नाक

ऐसी नाक वाले जातक तीस मारखा की श्रेणी में आते है। अपने आपकों सर्वश्रेष्ठ समझने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाले, कमजोरियों को छुपा लेने वाले किन्तु मन ही मन ईर्ष्या, द्वेष एवं कुण्ठाओं से ग्रसित रहते है। ये आलोचनात्मक एवं दिखावे की प्रवृत्ति वाले होते है।

14. ऊंची एवं तंग नाक

ऐसी नाक वाले जातक मिलनसार होते है। ये कभी अकेले नही रह पाते है। इनका खर्चीला स्वभाव आयु की मध्य अवस्था में कष्टकारक हो सकता है। इनकें वैवाहिक संबंध सदैव तनावपूर्ण रहते है।

15. अधिक उभारवाली नाक

ऐसे जातक मेहनती, विपरीत परिस्थितियों में पूर्ण जोश से काम करने वाले तथा चतुर-चालाक होते है। अगर इनका भाग्य साथ दे तो जीवन में बहुत समृद्धि प्राप्त कर सकते है।

16. एक दम सीधी नाक

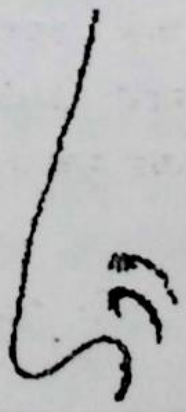

ऐसे जातक धार्मिक प्रकृति के होते है। विश्वसनीयता इनका सबसे अच्छा गुण होता है। विश्वसनीय कार्यो के लिये उपयुक्त होते है। अपने अच्छे गुणों के कारण ये उच्च पदों को प्राप्त करते है। धार्मिक क्रिया कलापों में ये सक्रिय रहते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

17. हुक जैसी नाक

ऐसी नाक वाले जातक ऊर्जावान, दूरदर्शी, पुरूषार्थी, विश्वसनीय, एकाग्र तथा उत्तम चारित्रिक विशेषताओं वाले होते है। ऐसी नाक वाले जातको का मस्तक उन्नत हो तो वे परोपकार करने वाले तथा सिद्धांतवादी होते है। धार्मिक कार्यो में भी ये रूचि लेते है।

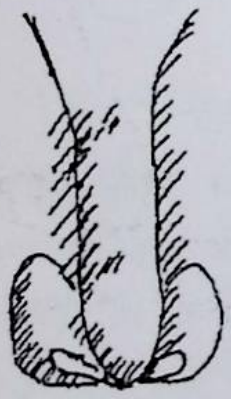

(III) नासिका छिद्र

नाक के दोनों नथुनों में नीचे की ओर दो छिद्र होते है। यह श्वास का प्रारंभ स्थल है इन्हें हम नासिका छिद्र के नाम से जानते है।

1. वतुर्ल या गोल नासिका

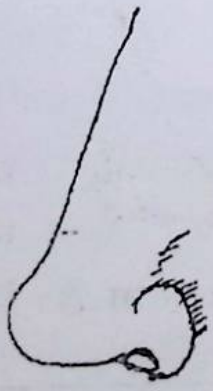

ऐसे छिद्र वाले जातक, सुन्दरता, आकर्षण, शिष्टता, सभ्यता तथा आशा के द्योतक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. चौड़े नासिका छिद्र

ऐसे जातक व्यवहारिक, क्रियात्मक, साहसी, विश्वसनीय तथा मेहनती होते है। डॉक्टर, इंजिनियर तथा वकीलों का नासिका छिद्र इस प्रकार का मिलता है।

3. वक्र या विषम नासिका छिद्र

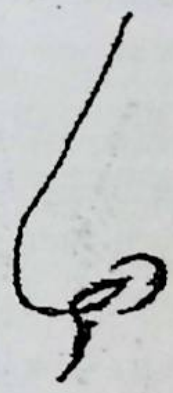

ऐसे जातक अविश्वसनीय, असध्य, दरिद्र उद्दण्ड, स्वार्थी तथा अहंकारी होते है। इस प्रकार की नासिका मे केश तथा आतंरित मांसपेशियां दिखाई पड़ती है तो ये चरित्र की दुर्बलता की अभिव्यक्ति करते है।

4. छोटी एवं पतली नासिका छिद्र

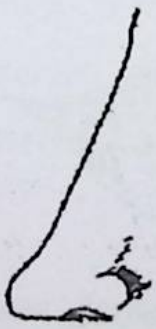

जातक साहसी प्रवृत्ति का होता है। वह हर कार्य सोच समझकर करने वाले होता है। कजूंस, स्वार्थी, क्रोधी एवं स्वभाव से चिड़चिड़ा भी होता है। ऐसा जातक जीवन के उत्तरार्द्ध में प्रायः अकेला रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होंठ

होंठ मानव चेहरे का वह अंग है जो व्यक्ति की स्नेहशीलता तथा अन्य प्रकार की भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। चेहरे का आकर्षण प्रभाव, सुन्दरता आदि होठों पर निर्भर करता है। होठों द्वारा मुस्कराना इतनी क्षमता रखता है कि दुश्मनों को भी अपना बनाया जा सकता है। छोटे बच्चे की निश्चल हंसी सारे जहां के गम भूला सकती है और हंसी का माध्यम होठ ही तो है। होठ अलग–अलग बनावट के होते है जिससे हम व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में पता लगा सकते है। अधर या होंठ कितने महत्वपूर्ण होते है। यही होंठ बोलने में अपनी अहम भूमिका निभाते है। कई वाद्य यंत्र होठों के संचालन द्वारा ही बजाएं जाते है जैसे बांसूरी, शहनाई, इत्यादि। होठों के अध्ययन के लिये हम इसे तीन क्रम बद्ध स्थितियों में रखेंगे।

(I) आकार
(II) स्थिति या प्रकार
(III) वर्ण (रंग)

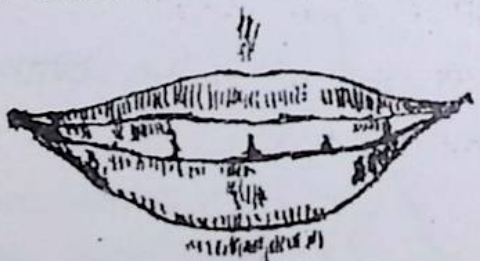

(I) आकार

होठों की बनावट में उपरी भाग को ओष्ठ व निचले भाग को अधर कहा जाता है। इन दोनों भागों की बनावट के आधार पर जातक के शुभ एवं अशुभ लक्षणों को जाना जा सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ. ऊपरी होंठ या ओष्ठ

1. ऊपरी होठ का मोटा होना जातक के भाग्यशाली व शुभ गुणों को बताता है लेकिन अत्यधिक मोटा होठ जातक को स्वार्थी, धोखेबाज अस्थिरचित्त वाला व कायर होना दर्शाता है।

2. ऊपरी होठ छोटा हो तो जातक दंभी दिखावटी तथा इच्छाहीन होता है। ऐसे व्यक्ति अपनी आत्म स्तुति करने वाले तथा दूसरे को भी अपनी आत्मस्तुति के लिये बाध्य करते है।

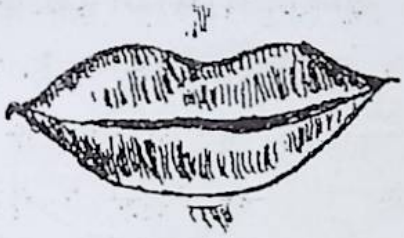

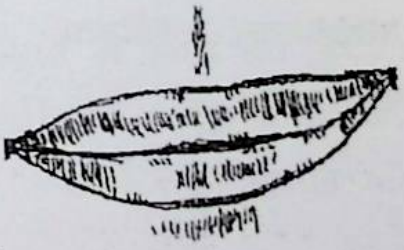

3. ऊपर का होठ लंबा एवं सीधा होना व्यक्ति में गंभीरता, स्थिरता आदि गुणों की ओर संकेत करता है।

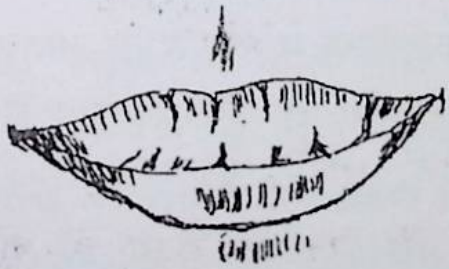

4. ऊपर का होठ अगर कटा-फटा हो तो व्यक्ति निर्धन भाग्यहीन तथा आलसी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. अधर या निचला होठ

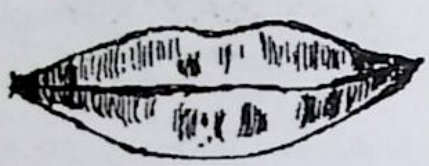

1. निचला होठ निम्न फल के समान हो तो ऐसा व्यक्ति सुखी समृद्ध ,बलवान एवं बुद्धिमान होता है। प्राचीन ग्रंथों मे निम्न फल के समान अधरों वाली स्त्रियों धन और पति सुख से पूर्ण होती है।

2. नीचे का होठ स्निग्धता एवं कोमलता लिये हुये हो तो जातक सुखी सम्पन्न स्नेही और व्यवहारिक होता है।

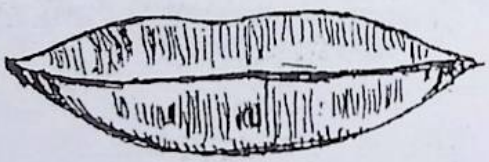

3. नीचे का होठ यदि स्थूल हो तो जातक में भावुकता, अस्थिरता, अधीरता, आवेगता व अपराधिक प्रवृत्तियों का सूचक है।

4. नीचे का होठ अगर पतला एवं लंबा हो तो जातक निर्धन व भाग्यहीन होता है। नीचे का होठ अगर अत्यधिक पतला है तो जातक चिडचिडा, अविश्वसनीय तथा हीन भावना से ग्रसित होता है।

5. नीचे का होंठ बाहर की ओर लटका हुआ हो तो जातक कमजोर चरित्रवाला तथा लोभी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. नीचे का होठ छोटा हो तो जातक कलाप्रिय, स्नेही, आड़म्बर पूर्ण जीवन जीवन वाला, घमंड़ी और नाटकीय गुणों वाला होता है।

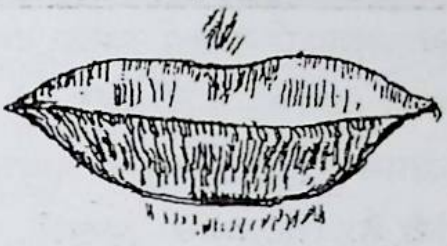

(II) होठों की स्थिति तथा प्रकार

1. अति सिकुड़े होठ

ऐसे जातक व्यवहारिकता से परे होते है। ये कम बुद्धि वाले होते है। अतः अपनी वाक शैली में साधारण ज्ञान का उपयोग नहीं कर पाते तथा अपनी बात को महत्व देना इनके स्वभाव में होता है। अपनी हीन भावनाओं को ये दिखावें की प्रवृत्ति द्वारा दूर करने की कोशिश करते है। ये चापलूसी पसंद, स्वार्थी तथा दूसरों को परेशान करने वाले होते है।

2. स्थूल या मोटे होंठ

अधिक थुलथुले मांसल होठ वाले जातक अविकसित बुद्धि वाले होते है। इनके लिये प्यार, व्यवहारिकता ईमानदारी, सम्पन्नता आदि सब बेकार है। ऐसे जातक व्यर्थ की बातों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

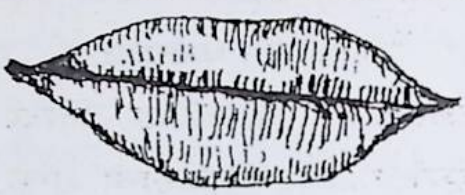

में अपना समय नष्ट करते है तथा अपनी झूठी बात को सत्य बताने के लिये अपना सर्वत्र लगा देते है। ऐसे व्यक्ति आलसी, घमंड़ी, क्रोधी, असाध्य, उदण्ड तथा पाशविक प्रवृत्तियों वाले होते है।

3. मोटे एवं विस्तृत होंठ

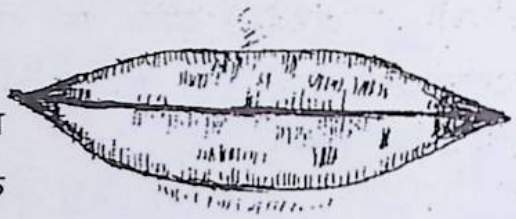

सामान्य से अत्यधिक लंबे मोटे तथा चौड़े होंठ वाले जातक वाचाल, शेखी बघारने वाले तथा अपने अहं को तुष्ट करने वाले होते है। ये मूर्ख, क्रोधी, व्यसनी, अहंकारी, असभ्यता के गुणों को दर्शाते है। स्वार्थ बुद्धि होने से दूसरों से कार्य लेने में सक्षम होते है। ऊपर का होंठ लटका हुआ हो तो ऐसे जातक उदार, बुद्धिमान, विवेकशील एवं दूसरों की सहायता करने वाले एवं मित्रता की भावना वाले होते है। निचला होठ मोटा, भारी एवं फेला हो तो ऐसे व्यक्ति घमंड़ी, स्वार्थी, चारित्रिक दुर्बलता वाले, अविश्वासी व्यसनी व बुरी संगत पसंद करने वाले होते है।

4. दीर्घ एवं पतले होंठ

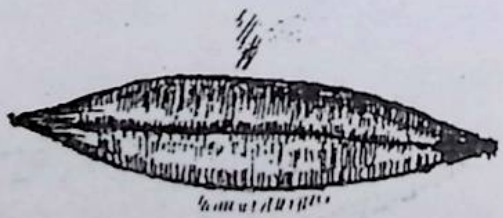

लंबाई की तुलना में ऐसे होंठ स्थूल नहीं होते। ऐसे जातक बातूनी, अकर्मण्य, काल्पनिक, भाग्यवादी एवं कलाप्रिय होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. वक्री होंठ

होठों की बनावट में कभी–कभी तिरछापन या वक्रता दिखाई देती है। ऐसे जातक कुटिलता, रहस्यात्मकता आदि अवगुणों वाले होते है। यदि ऐसे जातकों का अच्छे परिवेश में लालन पालन हुआ हो तो समाज व देश को अपनी जासूसी प्रवृत्ति के द्वारा सहायता दे सकते है या अपराधिक गुणों को धारण कर समाज के लिये घातक हो सकते है।

6. सामान्य होंठ

जब दोनों होठ एक समान हो तो ऐसे जातक परिश्रमी, सामान्य बुद्धि वाले व थोड़े स्वार्थी होते है। ये जातक अपनी सामान्य स्थिति मे जीने वाले होते है तथा अपना प्रभाव दूसरों पर जमाने में सक्षम होते है।

7. सूखे होंठ

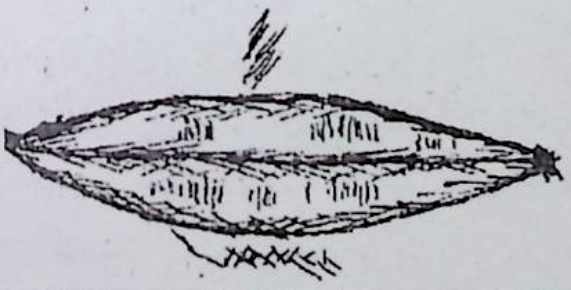

सूखे होंठ कभी शुभ फल प्रदान करने वाले नहीं होते है। ये जातक में अवगुणों की वृद्धि का कारक बनते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. धंसे हुये होंठ

कुछ जातकों के होठ अंदर की तरफ धंसे हुये प्रतीत होते है। ये जातक में भेदभाव, संकुचित दृष्टि, असभ्यता तथा रहस्यात्मकता आदि अवगुणों को दर्शाते है।

9. उत्तम होंठ

सरल समता लिये, संतुलित आकर्षण एवं कोमल होठ उत्कृष्ठ माने गये है। ऐसे होठ वाले जातक उदारमन, बुद्धिमान, शांतिचित्त एवं गंभीर एवं संतुलित स्वभाव वाले होते है।

(III) वर्ण या रंग

होठों के अध्ययन में होठ का रंग देश, काल, जाति आदि पर निर्भर भी होता है। मानव की त्वचा का रंग होठों के रंग में विशेष भूमिका निभाता है। जैसे गोरे रंग के लोगों के होठ का रंग लाल, सांवले रंग के व्यक्तियों के होठ का रंग सावंला होता है परन्तु कई विसंगतियों में अपवाद स्वरूप सावंले चेहरे पर गुलाबी होठ और गोरे चेहरे पर सांवले होठ संभव है।

1. गुलाबी होंठ

गुलाबी होठ वाले जातकों में व्यवहारिकता उदारता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्नेह और बुद्धिमता होती है। साथ ही जातक परिष्कृत आदतों वाला होता है।

2. लाल होठ

होठों का लाल रंग कर्मठता, साहस, जिद्धीपन, अधीरता एवं उत्तेजकता का सूचक है। होठों का लाल रंग लंबाई में झुर्रियों को दर्शाये तो मित्रता में स्थाई व गहरेपन का दर्शाता है। लाल रंग वाले जातक मृदु स्वभाव वाले और गुणवान होते है।

3. काले होठ

काले रंग के होठ दुर्गुणों को इंगित करते है। इनमें असमता, कठोरता, हृदय हीनता, स्वार्थ इत्यादि प्रमुख है।

4. श्वेत होठ

ये रोगी की पहचान भी है। ऐसे होठों वाले जातक भावुक, अस्वस्थ, निराशावादी एवं अर्कमण्य होता है।

5. मूंगे के रंग वाले होठ

ऐसे रंग के होठ वाले जातक विद्वान, चिंतक तथा वैभवशाली होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY
306, Arihant Plaza, Udaipole, UDAIPUR-313001, RAJASTHAN, (INDIA)
Phone : 0294-2427211, Mobile : 98292-43211
E-mail : mcvaadmission@gmail.com
website : www.mcvudaipur.com

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh